मई 2013

# दादावाणी

मूल्य : ₹ १०

कषाय और राग-द्वेष से बंधे हैं सारे संबंध :
हमें सुलझाने है उलझे हुए हमारे ऋणानुबंध :
हमारी आँखों के सामने आएँगे हमारे ही रिज़ल्ट :
जो आए उसे स्वीकार लो तो दुनिया होगी अस्त ।

**संपादक : डिम्पल महेता**
वर्ष : ८, अंक : ७
अखंड क्रमांक : ९१
**मई २०१३**

**संपर्क सूत्र :**
**त्रिमंदिर,** सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
**फोन :** (079) 39830100
**e-mail :**
dadavani@dadabhagwan.org
**www.dadabhagwan.org**

**Printed & Published by**
**Dimple Mehta** on behalf of
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

**Owned by**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

**Printed at**
**Amba Offset**
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI, Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Published at**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

**Total 32 pages including cover**

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**
**१५ साल**
भारत : ७५० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
**वार्षिक**
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## संसार खड़ा क़रार से

**संपादकीय**

यह संसार कर्म खपाने की दुकान है। हमारे जीवन में जो रिश्तें और व्यवहार चलते रहते हैं, वे सभी, पिछले जन्म में जो-जो योजना हो चुकी है वह इस अवतार में फल दे रही है। अपनी इच्छा के अनुसार टेन्डर भरकर, सारी डिज़ाइन पसंद करके खुद लाया होता है। उसमें फिर बदलाव नहीं किया जा सकता।

हर एक जीव को अपने-अपने क़रार के मुताबिक ही जीवन मिला होता है। दूसरा नया अच्छा क़रार कर सकता है लेकिन यह पुराना क़रार जो है उसका तो निबेड़ा लाना ही पड़ेगा। यह जो संसार क़रार है उसमें हर्ज़ नहीं है। यह ज्ञान प्राप्ति के बाद हम अलग और चंदूभाई भी अलग, इस तरह सब चल सकता है। लेकिन अब अगर सामनेवाले के व्यवहार को देखे और नापे और ज़िद पर अड़ जाए तो फिर क्या हो सकता है? परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं, 'अरे भाई, तूने ही किया हुआ है। तूने हस्ताक्षर किए हुए हैं इसलिए कॉन्ट्रैक्ट पूरा कर डाल न!' क्योंकि एग्रीमेन्ट का भंग नहीं किया जा सकता।

हमें तो अब मोक्ष में जाना है, इसलिए फाइलों का समभाव से हल ला दो। जगत् को गलत कहोगे तो दावा करेगा, मोक्ष में नहीं जाने देगा। हमें तो अब, क्लेम सच्चा हो या झूठा हो यह नहीं देखना है किन्तु जगत् में किसी भी जीव का क्लेम नहीं रहे इतना ही देखना है। और तभी मोक्ष होगा। सावधानी इतनी ही रखनी है कि गलत पर द्वेष नहीं होना चाहिए और अच्छे पर राग नहीं होना चाहिए। चलते-फिरते किसी जीव के साथ फिर से नए क़रार नहीं बंध जाए इतना देखते रहना। नहीं तो अगर कोई ऐसे क़रार बंध गए, तो वह जीव जहाँ जाएगा, उस क़रार को पूरा करने आपको भी वहाँ जाना पड़ेगा। वह अगर अधोगति में गया तो *निकाल* करने के लिए आपको भी वहाँ जाना पड़ेगा। अब नए क़रार खड़े नहीं करने हैं, पुराने जो हैं, उनका पेमेन्ट कर देंगे। दादाश्री कहते हैं, 'किन्तु मन में सहजभाव से यह रहना चाहिए कि अब ये क़रार जल्दी से पूरे (समाप्त) हो जाएँ, ताकि जल्दी हल आ जाए।'

जगत् व्यवस्थित के अधीन है। जिस काल में, जिस क्षेत्र में, जो द्रव्य-भाव, सभी साथ होकर जो भी भुगतने का आए उसमें किसी का चलता ही नहीं। लेन-देन तो चुकाने ही पड़ेंगे, उसमें चारा ही नहीं है न! अर्थात् सभी एग्रीमेन्ट पूरे (समाप्त) कर देने हैं। हमें तो छूटना है। अत: छूटने का कामी बंधन में डालनेवाली शर्तों का स्वीकार नहीं करेगा। सामनेवाला व्यक्ति चाहे जो भी करे, उसे तो कुछ पड़ी ही नहीं है न? जिसे छूटना है उसे ही पड़ी हुई होती है न!

फाइल नं-१ कर्माधीन है। इसलिए जो क़रार किए हैं वे पूरे करने ही पड़ेंगे। आप तो शुद्धात्मा हो गए इसलिए आपको अपने ज्ञायक धर्म में रहने की ज़रूरत है। और बाकी का सब व्यवस्थित के ताबे में है, उस समय सामनेवाले के क़रार के अधीन

क्रमश: पेज 2 पर

रहना पड़ेगा। लोगों के साथ जो क़रार किए हैं, तो वे अगर हमें यों ही छोड़ दे तो हर्ज़ नहीं है किन्तु हिसाब चुकाए बिना कौन छोड़ देगा? अपनी ओर से क़रार पूरे हो जाने चाहिए। और भावना करने से सामनेवाले व्यक्ति के क़रारों से भी छूटा जा सकता है। और जैसे ही सभी के क्लेम पूरे हो गए, वहीं मोक्ष है।

अपने को आत्मज्ञान की प्राप्ति तो हो गई किन्तु अभी पहले के (पिछले) क़रार पूरे करने बाकी हैं। वे क़रार कैसे पूरे हो सकते हैं? तब कहे पाँच आज्ञा का पालन, निर्दोष दृष्टि, और प्रतिक्रमण रूपी साधन से और नौ कलमों से, किसी भी प्रकार के क़रार का समता में रहकर *निकाल* किया जा सकता है। नए क़रार बाँधे बिना पुराने क़रारों का *निकाल* किस तरह किया जाए, प्रस्तुत संकलन में ऐसा अद्‌भुत विज्ञान बताया गया है, जो कि सभी महात्माओं के लिए प्रगति के पुरुषार्थ में अप्राप्त कड़ी के समान सिद्ध होगा।

**जय सच्चिदानंद**

## पाठकों से...

'दादावाणी' पत्रिका में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

# संसार खड़ा क़रार से

### नहीं कर सकते एग्रीमेन्ट का भंग

**प्रश्नकर्ता :** हमें धर्म के मार्ग पर जाना हो, तो घर-संसार छोड़ना पड़ता है। यह धर्म के कार्य के लिए अच्छा है परंतु घर के लोगों को दुःख होता है, किन्तु खुद के लिए घर-संसार छोड़े तो क्या वह अच्छा कहलाएगा?

**दादाश्री :** नहीं, घरवालों का हिसाब चुकाना ही पड़ेगा। उनका हिसाब चुकाने के बाद यदि वे सभी खुश होकर कहें कि 'आप जाइए,' तब कोई हर्ज़ नहीं है। लेकिन उन्हें दुःख हो ऐसा नहीं करना है। क्योंकि उस एग्रीमेन्ट का भंग नहीं कर सकते।

### गाँठें सभी क़रारवाली

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यह भौतिक संसार छोड़ देने का मन होता है, तो क्या करें?

**दादाश्री :** पहले कभी भौतिक संसार में घुसने का मन होता था?

**प्रश्नकर्ता :** तब तो ज्ञान नहीं था। अब तो ज्ञान मिला है इसलिए उसमें फर्क पड़ जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, उसमें फर्क पड़ जाता है लेकिन अब इसमें घुस गए हो तो अब निकलने का रास्ता खोजना पड़ेगा। यों ही भाग नहीं सकते। शादी का कितने साल का कॉन्ट्रैक्ट (क़रार) किया हुआ है?

**प्रश्नकर्ता :** पता नहीं।

**दादाश्री :** ऐसा है, जब कोई क़रारनामा आपने लिखकर दिया हो, तो क़रार (समझौता, अनुबंध) के मुताबिक चलना पड़ेगा न?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा क़रारनामा तो कौन लिखकर देता है?

**दादाश्री :** नहीं, वह तो जब जन्म होता है तब क़रारनामा लिखा हुआ ही होता है। हमें अगर छूटना हो तो हस्ताक्षर नहीं करने हैं। मतलब, चुपचाप सहन करना ही पड़ेगा!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन कितने जन्मों तक करना पड़ेगा ऐसा?

**दादाश्री :** वह तो जब फिर से नए क़रार करने की भावना हो, तब तय करके रखना कि अब फिर से नए क़रार करने ही नहीं हैं, तो फिर नहीं होंगे।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ दादा, तय कर ही लिया है।

**दादाश्री :** कर लेने जैसा ही है। यह गाँठ करारवाली है। बच्चों के साथ भी क़रार है और पत्नी के साथ भी क़रार, सारे क़रार ही हैं।

तूने एक होकर (तन्मयाकार होकर) क़रार किया था। तू अपना क़रार वापस खींच ले और तू उससे अलग रहे तो हर्ज़ नहीं है। पहले तू इसमें, चंदू में ही तन्मयाकार रहता था, इसलिए साथ-साथ तूने भी हस्ताक्षर किए थे। तूने कहा कि 'दादाजी मेरे हस्ताक्षर आप वापस ले लो,' तो मैंने कहा 'तू वापस ले ले (सहमती)' अर्थात् यह जो ज्ञान देता हूँ वह हस्ताक्षर वापस खींच लेता है, और तू अलग रह पाता है।

यह जो संसार के क़रार हैं उसमें हर्ज़ नहीं है। (यह ज्ञान प्राप्ति के बाद) 'हम' अलग और वह (चंदूभाई) भी अलग, इस तरह सब चलता रहे ऐसा है।

## गत भव में बाँधे, उदय इस भव में

बाकी, धार्युं (मनचाहा) कुछ होता नहीं। पुण्य किया हो तो धार्युं होता है और पाप किया हो तो धार्युं कभी होता ही नहीं, तो आप और क्या कर सकते हो? यों ही, संडास जाने तक की शक्ति नहीं है और क्यों उछलकूद करते हो? आपको ऐसा लगता है कि यह अपना घर है और परिवार है। नहीं, कर्म खपाने की दुकान है। ग्राहक-व्यापारी जैसा संबंध है।

**प्रश्नकर्ता :** पाप और पुण्य से उसका संबंध किस प्रकार से होता है?

**दादाश्री :** अभी आप यहाँ पर आए हो तो किसी को ठोकर नहीं लगे आप यहाँ इस तरह सँभलकर चलते हो और ठोकर लगे वैसी जगह हो, जगह वैसी भीड़वाली हो, लेकिन फिर भी मन में सोच तो यही होती है कि किसी को ठोकर लगे नहीं तो अच्छा है, ऐसी भावना से आप यहाँ आए, तो आपको पुण्य बंधेगा। और, भीड़ है इसलिए लग भी सकती है, ऐसी भावना से आए तो पाप बंधेगा।

किसी को अपने से किंचित्‌मात्र दु:ख हो जाए, तो पाप ही बंधता है। किसी को सुख पहुँचे, शांति हो, किसी के दिल को ठंडक हो, उससे निरा पुण्य ही बंधता है।

अब वे पूर्व के बंधे हुए पाप और पुण्य, वे फिर इस जन्म में उदय में आते हैं। योजना जो पिछले जन्म में हुई थी, वह इस जन्म में फलीभूत होती है।

## पहले चित्रित की हुई डिज़ाइन का परिणाम

**प्रश्नकर्ता :** इस जन्म में जिस पत्नी के साथ पूरी ज़िंदगी बिताई हो और भाव किए हों कि 'जन्मोंजन्म तक यही पत्नी मिले' तो क्या वही मिलेगी?

**दादाश्री :** नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, सामने उन्हें भी ऐसा ही भाव हो तो?

**दादाश्री :** तो मिलेगी। दोनों का एग्रीमेन्ट मेल खाए तो ऐसा संभव है। लेकिन दोनों का एग्रीमेन्ट शायद से मेल खा भी जाए, किन्तु पाप तो दोनों ने अलग-अलग प्रकार के ही किए होते हैं न! मतलब, ऐसा हो सकता है कि अगले जन्म में आप मनुष्य में आए हों तब वह चार पैरवाली हो गई हों! अथात् ऐसा मेल बैठना बहुत कठिन है।

आप चाहे कैसे भी और कितने भी क़रार करो, सर्जन करते समय आप चाहे सभी तरह के क़रार करो, सभी डिमान्ड करो, परंतु विसर्जन तो कुदरत के हाथ में है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, अभी जो वाइफ (पत्नी) मिली है तो पिछले जन्म में उसी के साथ भाव किए थे इसलिए वह मिली?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** तो किस आधार पर मिली?

**दादाश्री :** ऐसा कभी होता होगा? चाबियाँ कितने लीवर की आती हैं? ताले कितने लीवर के होते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** चार लीवर, आठ लीवर.... ऐसे सब होते हैं।

**दादाश्री :** फिर आप कहते हो कि देखो भाई, छः लीवर का ताला लाना, दो-तीन लीवर का मत लाना। मतलब, आपने पिछले जन्म में भावना की होती है कि 'इतने लीवरवाला ताला चाहिए' इसलिए फिर आपको वैसा मिल आता है। आपके हिसाब में 'यही थी,' ऐसा नहीं।

और आपने जो ताला खरीदा था, यह वही ताला है। अब दूसरे का ताला देखकर आपको यह ताला अच्छा नहीं लगता, ऐसा आप कहो तो वह आपकी गलती है। और आपने जो लिया है वह डिज़ाइन पसंद करके ही लिया है, और फिर हस्ताक्षर भी हैं। अब आप दूसरे का ताला देखते हो और कहते हो कि 'मुझे तो वैसा चाहिए, मेरे हिस्से में यह कहाँ से आया?' तो फिर क्या ऐसा चलता होगा? फिर वही ताला आपको इस पूरे जन्मभर के लिए चला लेना पड़ेगा। आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** सही बात है।

**दादाश्री :** और फिर पिछले जन्म के कॉज़िज (कारण) हों तभी वे मिलते हैं न, यहाँ रिश्तेदार के तौर पर? पत्नी यों ही नहीं आती। अनुमान नहीं है यह, गप्प नहीं है। यह तो हमारी पहले की चित्रण की हुई डिज़ाइन, उसके गुण वगैरह सबकुछ चित्रण किया था, वही मिला है यह। वही आ मिला है यह।

मतलब, यह जो जन्म वगैरह जो है, यह सब गप्प नहीं है। खुद की इच्छा से हुई प्रगति है। यह किसी के दबाव से नहीं हुआ है खुद की इच्छा में जो-जो आया, वैसी ही जगह पर जन्म होता है, और यह सब होता है। पति भी अपनी इच्छा में हो वैसा लाई हो, लेकिन फिर किसी और का देखती हो और नाप-तौल करती हो, तब उसका अच्छा है और अपना खराब। और वहाँ पर फिर बिगड़ जाता है। बाकी, जो कुछ भी लेकर आई हैं वह खुद की इच्छापूर्वक का जो टेन्डर भरा था, वही है। डिज़ाइन-विज़ाइन सबकुछ वैसा ही लेकर आता है। लेकिन यहाँ आने के बाद, बुद्धि से फिर बदल जाता है। इसलिए मैं कहता हूँ, 'चला ले न भई, तूने ही किया है।' तूने हस्ताक्षर किए हैं इसलिए कॉन्ट्रैक्ट पूरा कर डाल न, हस्ताक्षर किए हैं!

## मिलता है सबकुछ क़रार के मुताबिक ही

एक आदमी मुझे घुमाने ले गया, इन्जिनियर था, तीस साल का था। मैंने पूछा, 'कैसा है? पत्नी के साथ जमता है या नहीं?' वह कहने लगा, 'मैं उसके साथ नहीं बोलता।' मैंने कहा, 'अरे, अभी से नहीं बोलता, तो फिर पूरी ज़िंदगी किस तरह बिताएगा तू?' तब उसने कहा, 'नहीं, उसका स्वभाव ठीक नहीं है, वह मिलनसार नहीं है, उसमें ये नहीं है और वो नहीं है।' मैंने कहा, 'तब शादी से पहले तू वहाँ क्या देखने गया था?' तब उसने कहा, 'अंदर का किसने देखा था? मैंने तो बाहर से देखा था।' फिर मैंने उसे समझाया कि अभी चार-पाँच लोग यहाँ बैठें हो और तुझे बाज़ार से एक ताला लाने को कहें। और तू सारे ताले अच्छे से देखकर फिर एक

ताला लेकर आया, फिर अगर तुझे इस ताले को वापस देने जाना पड़े तो तुझे शरम आएगी या नहीं आएगी? तब कहे, 'नहीं, वह तो फिर वापस नहीं दे सकते।' तब मैंने कहा, 'अरे भाई, यह तू ताला (पत्नी) ही लेकर आया है, अब पूरी ज़िंदगी इसे निभा ले!' और फिर वैसा हुआ भी, उन दोनों की गाड़ी आज तक चल रही है, अभी भी चल रही है।

मैंने इतनी सी चाबी दी कि ताला खुल गया। सारी नासमझी थी, गप्प सारा! अरे सिर्फ बाज़ार से ताला लेकर आए हो तो भी रोब मारते हैं कि मेरी लाई हुई चीज़ वापस क्यों करनी पड़े! मैं देखकर लाया हूँ। और इसमें (पत्नी की बाबत में) खुद का रोब कहाँ चला गया? और यह क्या मटकी है कि जो बदली जा सके? मिट्टी की मटकी हो तो बदली जा सकती है। लेकिन यह मटकी नहीं है। ऐसा नहीं कर सकते।

अर्थात्, कितने कमरे चाहिए, वगैरह सबकुछ वह खुद लिखकर लाया है। और उतना ही उसे मिला होता है। अब दूसरों का देखकर उसमें लोभ जागता है। किसी और का देखकर खुद दु:खी होना इसी को इन्वाइटेड (आमंत्रित किए) दु:ख कहते हैं। तो किसी के पति को हम इस नज़र से देखें ही क्यों कि वह हमें अच्छा लगे और अपना पति बुरा लगे? सभी खरबूज़े हैं, कोई खरबूज़ा इतना, कोई इतना सा होता है। पिछले जन्म के एग्रीमेन्ट के बाद ही यह सब आपको मिलता है, और यहाँ आकर दूसरों का देखकर अड़ जाए तो फिर क्या हो सकता है? मैं तो कभी भी किसी और का देखकर नकल करता ही नहीं न! मैं जानता हूँ कि हम क़रार करके आए हैं। जो मिला वह करेक्ट (ठीक है)। ये सारे क़रार करके आए हैं। इसलिए, सामनेवाला अगर नहीं समझता, तो उस बाबत में क़रार के मुताबिक तू अपने आप इसका निबेड़ा ला दे।

अब नया क़रार अच्छा करना। नया करे न तो अच्छा करना, किन्तु यह जो पुराना क़रार है, उस एग्रीमेन्ट पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद यदि शोर मचाए तो वह गुनाह है। पत्नी को पसंद करके लाए, और अब शोर मचाए तो क्या होगा? पत्नी जानेवाली है नहीं और दिन बदलनेवाले हैं नहीं! इसी पत्नी का मिलना, यह गप्प नहीं है कि किसी ने भेज़ दी होगी। अपने क़रार के अनुसार है। फलाँ गाँव की, फलाँ की लड़की यह सब क़रार है। मेरी बात समझ में आ गई तो काम निकल जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है, समझ में आ गई।

**दादाश्री :** अत: यह तो क़रार है।

**प्रश्नकर्ता :** क़रार की वजह से रह रहे हैं?

**दादाश्री :** हाँ, क़रार। इस जन्म में आपका जो कुछ भी है न, वह सारा आपने ही सोचसमझकर लिखवाया था। और वही आपको मिल रहा है। क़रार तो पूरे होते ही है। लेकिन वह लिखवाया हुआ रूपक में आने के बाद, ओहो! मेरा इतना छोटा घर और इस मगनभाई का इतना बड़ा। अर्थात्, इस प्रकार औरों का देखकर क़रार बदल जाता है फिर और दु:खी होता है। क़रार के अनुसार चले तो एक्ज़ेक्ट उसके मुताबिक ही है।

## क़रार के अनुसार मिला, उसमें भूल किसकी?

**प्रश्नकर्ता :** दादा, शादी के बाद हीरा बा से आपका मतभेद पड़ा, फिर एडजस्टमेन्ट कैसे लिया वह बात बताइए।

**दादाश्री :** हाँ। शादी के बाद यहाँ बड़ौदा आने के बाद मैं बदल गया था। क्योंकि दोस्त बन गए थे। वे सभी दोस्त सिनेमा देखने लगे थे और मुझे सिनेमा देखना सिखाया और फिर तो मैं एटिकेट ढूँढने लगा। सिनेमा में तो सभी स्त्रियाँ एटिकेटवाली और यहाँ घर में एटिकेट नहीं था। पूर्वजन्म में ऐसे हस्ताक्षर किए होंगे, और यहाँ मैं मुकर गया। इस

वजह से थोड़ा मतभेद और झंझट होने लगी, उनके प्रति क्रुअल (निर्दय) नज़र रहने लगी। फिर पिछला हिसाब याद आया कि 'और क्या गलत है? यह किस कारण घर में ऐसा भूत घुस गया? शादी के बाद तीन सालों तक भूत नहीं था। यह तो बड़ौदा में आने के बाद हुआ। भूत घुस गया यानी बाहर का भूत घुसा है। यह भूत निकाल दो' कहा, बाद में सब निकाल दिया।

## क़रार के अनुसार यह जीवन

पूरा जगत् क़रार के अनुसार है। हर एक जीव को अपने-अपने क़रार के अनुसार ही जीवन मिलता है। क़रार लिखवाते समय हमें पहले वह तय कर लेना चाहिए। लेकिन अब अगर बच्चों के लिए करने जाएँ तो कैसे चलेगा? क़रार लिखवाते समय क्या कहता है, 'साहब, चलेगा। तीन कमरे होंगे तो मुझे चलेगा।' अरे भाई, तू तीन कमरे लिखवाकर अब बारह कमरे ढूँढ रहा है? तू कैसा आदमी है? मृत्यु के समय यहाँ सारे क़रार हो जाते हैं, तुझे क्या-क्या चाहिए और क्या-क्या चलेगा, सारे हिसाब हो जाते हैं। अर्थात् क़रार के अनुसार मिलता हैं। सबकुछ क़रार के अनुसार है। इसके बाहर कुछ भी नहीं है। क्योंकि, आप हक़ का खाते हो और अपने हक़ का भोगते हो यह सब। और स्वतंत्र हो, किसी के दबे हुए नहीं हो।

## एग्रीमेन्ट नहीं बदले जा सकते

**दादाश्री :** मुझसे कई लोग कहते हैं, 'आपको यहाँ मामा की पोल में मकान कैसे पुसाता है?' मैंने कहा, 'क्यों भाई?' तब कहते हैं, 'यहाँ ठीक नहीं लगता। इसके बजाय तो बाहर सोसाइटी में रहो न।' कहा। मैंने कहा, 'लेकिन मेरा तो यह क़रारी एग्रीमेन्ट है।'

**प्रश्नकर्ता :** क़रारी एग्रीमेन्ट?

**दादाश्री :** हाँ, क़रारी एग्रीमेन्ट नहीं बदल सकता। एग्रीमेन्ट से बाहर मैं नहीं चलता इसलिए कुछ झंझट ही नहीं न! लोग तो भले ही कितना बड़ा बंगला बनवाएँ, लेकिन हमें (अपने) क़रार के अनुसार देखना है न। आपको कैसा लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** इस तरह क़रार के मुताबिक ही रहना चाहिए।

**दादाश्री :** हम पूछें, 'तुझे यहाँ अच्छा लगता है?' तब कहता है, 'मुझे तो बहुत अच्छा लगता है।' 'तुझे कुछ तकलीफ है?' तब कहता है, 'खाना-पीना मिले तो, मुझे तो यह घर बहुत अच्छा लगता है।' क्यों? 'क्योंकि क़रार करके आया है।'

हाँ, नहीं तो सब दुःखी होते। कोई झोंपड़ेवाला दुःखी नहीं है। दुःख तो इन सेठों को है, जिन्होंने दो-पाँच बंगले बनवाए हैं फिर भी दो और बनवाने हैं, उन सेठों को दुःख है, उन्हें कोई दुःख नहीं है। उस बेचारे को तो यदि कोई अड़चन आए, उतना ही दुःख है। समझ में आया न?

अब पिछला जो कि अहंकार से खड़ा हो गया था, उसका हमेशा के लिए निबेड़ा तो लाना ही पड़ेगा न! निबेड़ा अर्थात् फाइलों का *निकाल* (निपटारा) करना पड़ेगा और उनके परिणाम भुगतने ही पड़ेंगे न, चारा ही नहीं है न! व्यवस्थित के मुताबिक भुगतना ही पड़ेगा, ठेठ तक।

## विवाह के समय क़रार, 'समय रहते सावधान'

भोजन के समय टेबल पर मतभेद होता है?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो होता है न!

**दादाश्री :** क्यों, शादी करते समय ऐसा क़रार किया था?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** उस समय तो क़रार यह किया था कि 'समय वर्ते सावधान।'

यदि आप कहो कि 'पेप्सी लाओ,' तो वे कहेंगी, 'नहीं हैं।' फिर भी 'कोई हर्ज़ नहीं, पानी ले आओ ऐसा कहना।' लेकिन ये तो कहते हैं, 'क्यों लाकर नहीं रखी?' यह दखल की वापस। अभी दोपहर को खाना खाने का टाइम हुआ हो और वह कहें कि 'आज तो खाना नहीं बनाया।' तो यदि मैं होऊँ तो कहूँ कि 'ठीक है, अच्छा किया। लाओ ज़रा पानी-वानी पी लें, बस।' ये तो कहेंगे, 'आपने क्यों नहीं बनाया?' थानेदार बन गया वहाँ पर।

अब पिछला जो कि अहंकार से खड़ा हो गया था, उसका हमेशा के लिए निबेड़ा तो लाना पड़ेगा न! निबेड़ा अर्थात् फाइलों का *निकाल* करना पड़ेगा और उनके परिणाम भुगतने ही पड़ेंगे न! चारा ही नहीं है न! व्यवस्थित के मुताबिक भुगतना ही पड़ेगा, ठेठ तक।

## विवाह के समय क़रार, 'समय रहते सावधान'

भोजन के समय टेबल पर मतभेद होता है?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो होता है न!

**दादाश्री :** क्यों, शादी करते समय ऐसा क़रार किया था?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** उस समय तो क़रार यह किया था कि 'समय वर्ते सावधान।'

यदि आप कहो कि 'पेप्सी लाओ,' तो वे कहेंगी, 'नहीं हैं।' फिर भी 'कोई हर्ज़ नहीं, पानी ले आओ ऐसा कहना।' लेकिन ये तो कहते हैं, 'क्यों लाकर नहीं रखी?' यह दखल की वापस। अभी दोपहर को खाना खाने का टाइम हुआ हो और वह कहें कि 'आज तो खाना नहीं बनाया।' तो यदि मैं होऊँ तो कहूँ कि 'ठीक है, अच्छा किया। लाओ ज़रा पानी-वानी पी लें, बस।' ये तो कहेंगे, 'आपने क्यों नहीं बनाया?' थानेदार बन गया वहाँ पर।

## मिलता है सबकुछ भोगनेवाले के हिसाब के अनुसार

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, पूरे दिन आप काम करके आएँ हों और बहुत भूख लगी हो लेकिन शाम को ठीक से खाना नहीं मिले तो आप क्या करेंगे?

**दादाश्री :** 'भुगते उसी की भूल'

**प्रश्नकर्ता :** दोनों तरफ से मार पड़ती है न!

**दादाश्री :** दोनों तरफ मार ही है। यह दुनिया खोटी है सारी। आपका हिसाब आकर ही रहेगा। आप मना करोगे तो भी टेबल पर आ जाएगा। आप कहो, 'ये सब मत बनाना' तो भी वह हाज़िर हो जाएगा। मेरे लिए कितनी (सारी) चीज़ें हाज़िर होती है! तो मुझे भी बार-बार मना करना पड़ता है। ये कहेंगे, रस लाऊँ, आम लाऊँ। अरे भाई, मुझे ज़रूरत नहीं है इनकी। कितनी (सारी) चीज़ें हाज़िर करते हैं! उसमें भी मुझे तो ज़रूरत नहीं होती। मुझे क्या-क्या हाज़िर नहीं करते हैं ये लोग? आपको क्या लगता है? भोजन के समय, हर समय क्या कुछ हाज़िर नहीं करते होंगे लोग? लेकिन हमें ज़रूरत नहीं है किसी तरह की, और तिरस्कार भी नहीं है। आपने रखा तो थोड़ा टुकड़ा ले लेते हैं, आप बहुत आग्रह करो, तब नहीं खाना हो फिर भी एक टुकड़ा ले लेते हैं। आप कड़वा दो तो भी पी लेते हैं, थोड़ा सा पी लेते हैं। अपने को तो एडजस्ट हो जाना चाहिए।

लेकिन 'नहीं' शब्द तो निकाल ही देना डिक्शनेरी में से। इस 'नहीं' से ही यह दुनिया कायम है। नहीं कहने से ही लोग क्लेम करते हैं।

## जब तक क्लेम बाकी, तब तक जोखिम

जगत् को गलत कहोगे तो वह दावा करेगा, मोक्ष में नहीं जाने देगा। जगत् भी वास्तविक है और आत्मा भी वास्तविक है।

'ये सही हैं और ये भूलवाले हैं' यह कहना

वही भूल है अपनी। हमें तो तुरंत ही ऐसा मान लेना चाहिए कि 'भाई, इनका सच है और हमारा गलत।' ऐसा करके चलने लगो तो उन्हें भी कोई दखल रही नहीं न! किसी का 'क्लेम' नहीं रहेगा, फिर। किसी का 'क्लेम' रखें और हम छूट जाए, ऐसा होगा नहीं न!

क्लेम सही हो या गलत वह नहीं देखना है लेकिन जगत् में किसी भी जीव का आप पर क्लेम नहीं होगा तभी मोक्ष हो पाएगा। जब तक क्लेम है, तब तक मूल आत्मा का प्रभाव नहीं है।

जो अपना है वह अपना है, उसे कोई ले नहीं लेगा। और जो पराया है वह अपना हो नहीं पाएगा, तो फिर क्यों क़रार करना और जो क़रार हो चुके हैं उन्हें पूरा करना है हमें। हम मना करते हैं? कुछ उल्टा बोलते हैं? क्या ऐसा बोलना चाहिए हमें? उल्टा नहीं बोल सकते और बोलेंगे तो वह छोड़ेगी नहीं। बाकी सभी छोड़ देंगे?

## हस्ताक्षर कर दिए हैं, उससे फँसाव

**प्रश्नकर्ता :** जब दिमाग़ संतुलित होता है तब अपना ज्ञान तो अपने पास है ही, लेकिन जब आवेश आ जाता है, तब संतुलन खो देता है।

**दादाश्री :** तो वह ज्ञान है ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** किसी के साथ अपना मनभेद हो गया हो, तब उसे हमारे साथ मनभेद नहीं हो उसके लिए सोच समझकर उसके साथ इस तरह बर्ताव करें तो वह ज्ञान बताती है तब उस समय मुझे आवेश आ जाता है कि 'मुझ अकेले को ही यह सब....

**दादाश्री :** ऐसी समझ होगी, तब न! यह ज्ञान नहीं है, यह समझ है। समझ ऐसी होती है लेकिन, वह समझ अमल में नहीं आती। अमल में क्यों नहीं आती क्योंकि आपने किसी और जगह पर हस्ताक्षर कर दिए हैं, कॉन्ट्रैक्ट पेपर पर। इसलिए आपको समझ में आने से पहले ही दिखा देते हैं कि भाई, ये हस्ताक्षर आपके हैं। आपका चलने ही नहीं देंगी वह। वह कब चलने देंगी? आप यहाँ से, इस घर के मालिक हैं उसे कहा, 'मैं इस घर में से बाहर नहीं निकलूँगा,' इस प्रकार से हस्ताक्षर कर दिए हो, तब यदि आपको वापस आना हो तो आने दे? क्यों नहीं बोलते?'

**प्रश्नकर्ता :** नहीं आने देंगे।

**दादाश्री :** उसी प्रकार ये हस्ताक्षर कर दिए हैं, हस्ताक्षर मत करना। ये हस्ताक्षर कर दिए हैं उसी वजह से यह फँसाव है।

## क़रार पूरे करने ही पड़ेंगे

**प्रश्नकर्ता :** सत्संग में आता हूँ, वह घरवालों को पसंद नहीं है। बाकी, मैं उनके साथ कभी भी उल्टा व्यवहार करता नहीं, इसके बावजूद भी वे खुश क्यों नहीं होते?

**दादाश्री :** जब तक तुझे हिसाब भुगतना है, तब तक खुश कैसे होंगे?

**प्रश्नकर्ता :** खुश नहीं हों न, तो भी हर्ज़ नहीं है, लेकिन नोर्मल रहे न तो भी मुझे अच्छा लगे।

**दादाश्री :** नोर्मल रहेंगे ही नहीं। वे नोर्मल हों तब भी आपको 'खुश ही है' ऐसा मानना चाहिए। उन्हें आप पसंद नहीं हो। आपके जो आचार-विचार हैं, वे उन्हें पसंद नहीं हैं। ऐसा जानने के बावजूद भी आपको उनके साथ बैठकर खाना पड़ता है, रहना पड़ता है, 'हाँ' कहना पड़ता है। क्या करें? चारा ही नहीं न? वह कर्म भुगतने ही पड़ेंगे। जिस काल में, जिस क्षेत्र में, जिस द्रव्य-भाव सभी साथ होकर जो भुगतना है, उसमें चलेगा ही नहीं। भाग जाओगे तो, कहाँ तक भागोगे?

ये हमारे पास आसरा लेने आए होते हैं न! वे लोग आसरा लेने आए हैं और हमें देना है, दोनों का

एग्रीमेन्ट तो पूरा होना चाहिए न? रागपूर्वक नहीं, टाइमपूर्वक। टाइम जाना चाहिए, लेन-देन चुकता कर डालिए।

## एग्रीमेन्ट है टेम्परारी

शादी और अन्य सभी संबंध एकपक्षीय एग्रीमेन्ट हैं। वे कितने समय तक चलेंगे? किसी भी क्षण नोटिस दिए बिना खत्म हो सकते हैं, ऐसे हैं। (मतलब कभी भी मौत आ सकता है।) तो फिर उनका क्या मोह? मेरा-मेरा क्या करते हो? सभी कहते हैं कि यह मेरे फैमिली डॉक्टर हैं, तो क्या जब वह कहनेवाला मर जाता है तो डॉक्टर रोता है? वह तो एक प्रकार का एग्रीमेन्ट है, लौकिक है। यानी कि नाटक है। नाटक तो नाटक है, परमानेन्ट (कायम) नहीं है। नौकर को यदि आपने गुस्से में डाँटा हो, लेकिन फिर तुरंत ही चाय लाने को कहो, तो चाय विवेक और विनयपूर्वक लाएगा और धीरे से रखेगा क्योंकि नौकर जानता है कि मैं अन्डर एग्रीमेन्ट (क़रार अनुसार) हूँ। और यदि आपने पत्नी को गुस्से में डाँटा हो और फिर चाय लाने को कहोगे तो वह मुँह चढ़ाकर लाएगी। इतना ही नहीं लेकिन वापस टेबल पर कप पटककर रखेगी, क्योंकि वह अन्डर एग्रीमेन्ट नहीं है।

किसी को भी उद्वेग न हो वैसा करना। किसी को भी धक्का मत मारो। समता से *निकाल* करो। इस दुनिया में सभी की टेम्परारी रिलेशनशिप, अन्डर एग्रीमेन्ट (क़रार अनुसार क्षणिक संबंध) जैसी है। अन्डर एग्रीमेन्ट में मात्र सिन्स्यरिटी और मॉरलिटी ही रखनी होती है।

टेम्परारी रिलेशनशिप अन्डर एग्रीमेन्ट टर्मिनेटेड विदाउट नोटिस एट एनी टाइम (एग्रीमेन्ट के तहत टेम्परारी संबंध नोटिस दिए बिना किसी भी समय खत्म किए जा सकते हैं।) यह विवाह ऐसी ही चीज़ है। किसी और की ज़मीन पर या फिर लीज़ पर लिए हुए प्लॉट पर तो हम मकान भी नहीं बनाते, उसी प्रकार विवाह का एग्रीमेन्ट भी पाँच-पचास वर्ष के लिए ही है। उस पर कितनी सारी अनन्य ममताओं की बिल्डिंग बना लेते हो!

किसी पर भी गाढ़ ममता नहीं रखनी चाहिए, लेकिन खुद का फ़र्ज़ अच्छी तरह से पूरा करना चाहिए।

अब तो आपके पास ये क़रार पूरे करने के सिवा चारा ही नहीं है न! सभी पूरे हो भी जाएँगे क्योंकि ये क़रार सुल्टाने शुरू किए तो सबकुछ पूरा हो ही जाएगा। दादा के नाम पर यह सब करना शुरू कर दो।

## संसार क़रारी, इसलिए वहाँ रहना सावधान

जिसे पाँच लाख का माल दिया हो और उसे कुछ न कुछ गालियाँ देते रहें तो क्या होगा? क्योंकि माल दिया वह तो एग्रीमेन्ट है, क़रार के तहत दिया है। उधार पर दिया है क़रार से और उस क़रार का पालन नहीं किया उसने और यदि पैसे वापस नहीं दिए, तो उसने क़रार का भंग किया, ऐसा कहा जाएगा। और आप उसे गालियाँ देकर झगड़ा करो, तो इस तरह से क़रार भंग नहीं करना चाहिए। नहीं तो फिर वह क्या कहेगा कि मेरे क़रार में ऐसी शर्त नहीं थी कि आपको मुझे गालियाँ देनी, इसलिए इस एकस्ट्रा (विशेष) आइटम के दो लाख रुपये काट लेता हूँ। उसे एकस्ट्रा आइटम मानकर उसके लिए दो लाख रुपये काटकर, 'बाकी के तीन लाख रुपये आप ले जाओ,' कहेगा। पाँच लाख उधार दिए थे, क्या यह एकस्ट्रा आइटम देने का अधिकार है आपको, गालियाँ देने का?

## यह तो एकस्ट्रा आइटम

वसूलदार एक व्यक्ति को परेशान कर रहा था। वह मुझे कहने आया कि 'यह वसूलदार मुझे खूब गालियाँ दे रहा था।' मैंने कहा कि 'जब वह आए तब मुझे बुलाना।' फिर जब वह वसूलदार

आया, तब उस भाई का बेटा मुझे बुलाने आया। मैं उसके घर गया। मैं बाहर बैठा और वह वसूलदार अंदर उस व्यक्ति से कह रहा था, 'तुम ऐसी नालायकी कर रहे हो? यह तो बदमाशी है।' जैसे-तैसे बहुत गालियाँ देने लगा। इसलिए फिर मैंने अंदर जाकर कहा, 'आप वसूलदार हो न?' तब कहा, 'हाँ, मैं वसूलदार हूँ।' मैंने कहा, ''और ये देनेवाले हैं। आप दोनों का एग्रीमेन्ट है। उसने देने का एग्रीमेन्ट किया है और आपने लेने का एग्रीमेन्ट किया है। और आप जो ये गालियाँ दे रहे हो वह 'एकस्ट्रा आइटम' है, उसका पेमेन्ट करना पड़ेगा। गालियाँ देने की शर्त एग्रीमेन्ट में नहीं की है। हर एक गाली के चालीस रुपये कटेंगे। अगर तू विनय से बाहर बोला तो वह एकस्ट्रा आइटम कहलाता है, क्योंकि तू एग्रीमेन्ट से बाहर चला गया।'' ऐसा कहे तब वह घनचक्कर भी सीधा हो जाएगा और फिर ऐसी गालियाँ नहीं देगा न! उसे समझ नहीं है कि इन गालियों का मतलब क्या है? ये 'एकस्ट्रा आइटम' हैं। इसे देने हैं वह शर्त है, तुझे लेने हैं, वह शर्त है। और यह एकस्ट्रा आइटम कहाँ से आया? इस 'एकस्ट्रा आइटम' के पैसे देने पड़ेंगे। 'एकस्ट्रा' क्यों बोला तू?

हम तो इस तरह से कहते हैं कि उससे जवाब नहीं दिया जाए और वह सीधा हो जाए। हमने तो यह देह है न, उसे सट्टे में रख दिया है। जिसने सट्टे में रख दिया हो उसे कोई डर होगा भला? हम इतना-इतना कहते हैं, परंतु वह उसके हित के लिए होता है। हमारा खुद का हित तो हो चुका है, सर्वस्व हित हो चुका है, तब आपके हित के लिए मुझे कहना पड़ रहा है।

### नहीं करना दखल डिस्चार्ज कर्मों में

हमेशा पोज़िटिव बोलना, नेगेटिव नहीं बोलना, नेगेटिव से सब जगह गड़बड़ हो जाएगी। अत: कभी किसी को टोकना भी नहीं चाहिए। उसे इतना ही कहना कि 'सत्संग के लिए आना।' यदि और कुछ कहोगे तो आपके शब्द आपको वापस मिलेंगे कि 'नहीं, मुझे जाना पड़ेगा, आप मना कर रहे हो लेकिन मुझे जाना है।' तब समझना कि दखल कर दी, यानी दखल हुई न! हम ऐसा नहीं करते। वे शब्द तुरंत ही वापस ले लेते हैं, 'नहीं, ठीक है। हम ऐसा कहते हैं, लेकिन हम तो यह शब्द वापस खींच लेते हैं। हमें नहीं कहना चाहिए था आपसे।'

इस प्रकार से शब्दों को वापस नहीं लेना, उसी को 'दखल' कहा है। दखल किया तो गड़बड़ हो जाती है। आप तो उसे कहोगे, लेकिन प्रकृति छोड़ेगी नहीं न! वह खुद नहीं कहता है। वह सभी क़रार करके आया होता है तो भी वे क़रार टूट जाते हैं क्योंकि वह प्रकृति से बंधा हुआ है। डिस्चार्ज हैं कर्म। हम जानते हैं कि जो होना है उसमें उसका भी चलनेवाला नहीं है, मेरा भी चलनेवाला नहीं है। बेकार ही क्यों उसमें दखल करनी!

### अजागृति से बंधे नए क़रार

**प्रश्नकर्ता :** यानी आप उसकी गलती नहीं देखेंगे, ऐसा?

**दादाश्री :** उसकी गलती तो देखनी ही नहीं है। अगर वह कठोर बोले तो हमें मृदु-ऋजु बोलना है। क्योंकि आपको छूटना है। उसे भले ही जो करना हो वह करे। उसे बंधन अच्छा लगता है या मुक्ति अच्छी लगती है, वह वही जाने लेकिन आपको तो मुक्त होना है। यानी छूटने का कामी बंधन में आने की शर्त स्वीकार नहीं करता, जबकि सामनेवाला व्यक्ति एग्रीमेन्ट करवाने का प्रयत्न करता है। वह कठोर बोले और आप भी कठोर बोलो तो वह बंधन में आने की शर्त हो गई। आप छूटने के ही कामी हैं। वह कठोर शब्द बोले तो भी आपको मृदु-ऋजु भाषा बोलनी चाहिए क्योंकि वह ज़िम्मेदार व्यक्ति नहीं है, वह तो जैसा चाहे

वैसा बोलेगा। आप ज़िम्मेदार हो, आपको एक ही दिशा में जाना है।

कोई आप से खराब भाषा में बोले और आप भी तुच्छता से बोले तो वह नहीं चलेगा। आप अगर तुच्छता से बोलेंगे तो दूसरा नया क़रार हो जाएगा, क़रार पर क़रार हो जाएगा। पहले तो ज़िम्मेदारी नहीं समझते थे इसलिए जवाब में तुच्छता से बोलते थे। लेकिन अब तो क़रार खत्म कर देने हैं, इसलिए अब आप जवाब में तुच्छता से मत बोलना।

## दावा करने के क्या जोखिम?

आप से किसी को किंचित्‌मात्र दु:ख हो जाए, तो वापस (कुदरत की) कोर्ट में केस चलता रहेगा। जब तक कोर्ट में झगड़ा है, तब तक छूट नहीं पाओगे। ये सभी कोर्ट के झगड़ें में आए हुए लोग है। अब यदि कोर्ट के झगड़ें मिटाने हों तो, आपको यदि किसी ने गाली दी हो, तो उसे छोड़ देना और आप किसी को गाली मत देना क्योंकि यदि आप दावा करेंगे तो भी केस चलता रहेगा। आप यदि फौज़दारी करोगे तो फिर वकील ढूँढने जाना पड़ेगा। हमें अब यहाँ से मुक्त होना है, यहाँ पर अच्छा नहीं लगता, इसलिए हमें यह तरीका अपनाना पड़ेगा, सबकुछ छोड़ देना है।

किसी से किसी को किंचित्‌मात्र दु:ख हो जाए तो वह जीव मोक्ष में नहीं जा पाएगा, फिर भले ही वह साधु-महाराज हो या कोई भी हो। सिर्फ एक शिष्य को भी यदि महाराज से दु:ख हो जाए तो भी महाराज को यहाँ पर रुके रहना पड़ेगा। ऐसा चलेगा ही नहीं।

किसी को थोड़ा सा भी दु:ख हो जाए, हमारे मुँह से ऐसा शब्द निकलता ही नहीं। सामनेवाला तो भले ही कुछ भी पागलपन करे उसे तो कुछ पड़ी ही नहीं है न? जिसे छूटना है उसी को पड़ी है न?

## वहाँ सावधान रहना

कोई चाहे जैसा बोले, उस घड़ी यदि हम जवाब दे दें, फिर वह चाहे जितना भी सुंदर हो, लेकिन थोड़ा सा भी स्पंदन फिंक जाएँ, तब भी नहीं चलेगा। सामनेवाले को सभी कुछ बोलने की छूट है, वह स्वतंत्र है; अभी वे बच्चे ढेला फेंकना चाहें तो उसमें क्या वे स्वतंत्र नहीं है? पुलिसवाला जब तक रोके नहीं, तब तक स्वतंत्र ही है। सामनेवाला जीव तो, जो चाहे सो करे। यदि वह टेढ़ा चले और बैर रखे; तब तो लाख जन्मों तक मोक्ष में नहीं जाने देगा! इसीलिए तो हम कहते हैं कि सावधान रहना। टेढ़ा मिले तो जैसे-तैसे करके, भाईसाहब करके भी छूट जाना! इस जगत्‌ से छूटने जैसा है।

यह अक्रम विज्ञान है, (यहाँ) सिर्फ इतनी ही सावधानी रखनी है कि किसी चलते-फिरते जीव के साथ फिर से क़रार नहीं बंधे इतना देखना। किसी भी चलने-फिरनेवाले जीव को *तरछोड़* (तिरस्कार सहित दुत्कारना) नहीं लगनी चाहिए उसे दु:ख नहीं हो ऐसा बर्ताव करना चाहिए। उसके प्रति आकर्षण नहीं होना चाहिए। आम के प्रति आकर्षण हो तो उसमें हर्ज़ नहीं है। हाफूज़ का आम सुंदर दिखता है और उसके प्रति आकर्षण हो तो ले लेना और छीलकर खाना आराम से, लेकिन और किसी में मत पड़ना। हाँ, वह आपको निकलने (संसार में से) नहीं देगा।

## क़रार हो जाते हैं जीवित लोगों के साथ

किसी जीव पर राग-द्वेष हुआ, यानी किसी के प्रति तिरस्कार हुआ, किसी कोढ़ी को देखकर तिरस्कार हो जाता है, एकदम। कई लोग तो भिखारी को देखकर ऐसे *तरछोड़* मारते हैं, 'अरे ये लोग नालायक ऐसे हैं, वैसे हैं,' ऐसा क्यों होना चाहिए? बहुत ज़ोरदार *तरछोड़* लग गई होगी तो, जहाँ वह भिखारी जन्म पाएगा, आपको वहाँ पर क़रार पूरे करने जाना पड़ेगा। इसलिए किसी चलने-फिरनेवाले

जीव के साथ झंझट मत करना और यदि चलने-फिरनेवाले नहीं हों, जैसे कि यह हाफ़ूज़ आम जलेबी, लड्डू वगैरह सभी खाना। क्योंकि उनके साथ क़रार नहीं है। दो तरफ के क़रार नहीं है, एक ही तरफ़ा क़रार है। दोनों पार्टियों का क़रार नहीं हो इतना देखना। जहाँ सामनेवाली पार्टी है, वहाँ पर सावधान रहना। मैं क्या कहना चाहता हूँ वह आपको समझ में आया? आप व्यापारियों में भी नियम होते हैं न कि इतना देखना, सावधान रहना। इस पार्टी के साथ इतने ही क़रार करने चाहिए इससे आगे क़रार नहीं करने हैं! ऐसा है यह। और ऐसा भी कुछ ही लोगों के साथ, जो सामनेवाली पार्टी नहीं मानी जाती। यह (तकिया) है, वह पार्टी नहीं कहलाती। उसे यदि मैं ऐसे करके बैठूँ या ऐसे करके बैठूँ तो भी मुझे परेशानी नहीं होगी। लेकिन एक कुत्ते को बहुत दबाकर बैठूँगा तो, वह तो पार्टी कहलाती है।

दो पार्टियों का क़रार हुआ हो तो, वह पार्टी जहाँ जाए वहाँ पर वापस आपको भी जाना पड़ेगा उसका हिसाब चुकाने के लिए। इसी वजह से इसे चार-सौ वॉट का पावर कहा जाता है। क्या कहा जाता है?

**प्रश्नकर्ता :** चार-सौ वॉट पावर।

**दादाश्री :** जबकि वहाँ तो लोग छूते भी नहीं है। हं, ऐसे रेडियो-वेडियो को छूते हैं, बाकी सभी चीज़ों को छूते हैं, लेकिन चार-सौ वॉट आए, वहाँ पर नहीं छूते। जानते हैं कि चार-सौ वॉट है यह और वहाँ खतरे का निशान (भय सिग्नल) लगाया हुआ होता है न, उसी तरह मुझे भी यह भय सिग्नल दिखा देना पड़ता है। यह अक्रम विज्ञान है, (इसमें) इतना ही भय सिग्नल है, अन्य कोई भय सिग्नल नहीं है। और हमारे इन पाँच वाक्यों (आज्ञा) में रहोगे तब तो फिर किसी तरह का सिग्नल रहेगा ही नहीं। मुझे भय सिग्नल भी नहीं देना है। हमने जो ज्ञान दिया है, वह पूर्ण ज्ञान है।

## भयस्थान कहाँ-कहाँ है, समझ लेना

भयस्थान होते हैं, लाल झंडी दिखाने की जगह होती है हर एक जगह पर। यहाँ की लाल झंडी क्या है? तब कहें, चलते-फिरते जीव हों; उन्हें परेशान मत करना।

किसी को देखकर आपको द्वेष हुआ, किसी लंगड़े को देखकर आपको उसकी टीका-टिप्पणी (कामेन्ट) करने का मन हुआ, ऐसा कैसे कर सकते हैं?

कोई कोढ़ी बैठा हुआ हो तो पहले की आदत का अभ्यास तो है ही, अज्ञानता के समय जो था वह अभ्यास तो आँखों को हैं ही न, अभी तक? उसकी वजह से चिढ़ होती है और उल्टा-सीधा कह देता है कि, ऐसे क्यों छुआ और ऐसा क्यों किया? पहले का अभ्यास है न, उस समय शायद भूल हो भी जाए। किसी को देखकर मन में ऐसे तुच्छ विचार आएँ और शायद अगर चंदूभाई उसे परेशान करें या छेड़ें तो आप तुरंत ही चंदूभाई को डाँटना।

आप चंदूभाई से कहना कि 'दादा का ज्ञान मिलने के बाद भी क्यों ऐसा सोचा? एक धोल लगा दूँगा,' ऐसा कहना। 'ऐसा क्यों करते हो अब? क्यों ऐसा गलत करते हो? ऐसा क्यों किया? ऐसा नहीं होना चाहिए, कहना। आत्मा देखो, माफी माँगो, कहना। डाँटना, माफी मँगवा लेना,' बस इतना ही।

तब यदि वह ऐसा करे तो ऐसे ज़रा डाँटना पड़ेगा। पहले लोग हमें डाँटते थे क्योंकि खुद को पता ही नहीं था कि क्या गलत कर रहा है। अब खुद को खुद का पता चलता है इसीलिए खुद ही खुद को डाँटना। ऐसा हो सकता है या नहीं हो सकता?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा।

**दादाश्री :** इस भयस्थान को तू समझ गया

न? सिर्फ यह नया करार ही। एक भूल, भयस्थान है इतना। नहीं तो और भी क़रार हो जाएँगे। चलते-फिरते जीवों के साथ क़रार हो जाएँगे। स्थावर जीवों (जो चल फिर नहीं सकें ऐसे जीव) के साथ कोई हर्ज़ नहीं है, त्रस्त जीवों के साथ हर्ज़ है। चलते-फिरते जीवों के साथ फिर से क़रार नहीं हों ऐसा रखना। उनमें शुद्धात्मा है, वह तो तय है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, है।

**दादाश्री :** तो उसके साथ फिर से क़रार नहीं हो जाए इतना देखना।

## किसी को दुःख नहीं हो अपने से

किसी भी जीव को अपने से किंचित्‌मात्र भी दुःख नहीं हो इतना ही क़रार है। क़रार नहीं टूटे इतना देखना।

ऐसा है, जैसा उसके 'व्यवस्थित' के ताबे में होता है, बेचारा वैसा ही करता है। उसमें हमें क्या लेना-देना? टीका करने का हमारे पास कोई कारण है? हम उसके साथ नये क़रार क्यों बाँधे? उसे जो अनुकूल आए, वैसा वह करता है। हमें तो मोक्ष के साथ ही काम है। हमें दूसरे के साथ काम नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** मोह की *लागणी* (भावुकतावाला प्रेम) भी नहीं होनी चाहिए न?

**दादाश्री :** किसी भी प्रकार की जो *लागणी* है न वह क़रार कहलाती है। मोह की *लागणी* या द्वेष की *लागणी* दोनों क़रार कहलाती है। क़रार नहीं होने चाहिए किसी के साथ।

## राग-द्वेष की जोखिमदारी कितनी?

**प्रश्नकर्ता :** जितना जोखिम द्वेष में है उतना ही प्रेम या मोह में है? दोनों में से ज़्यादा जोखिमवाला कौन सा?

**दादाश्री :** प्रेम के बजाय द्वेष अधिक जोखिमदार है। प्रेम की जोखिमदारी कम है क्योंकि द्वेष में से प्रेम जन्म लेता है। द्वेष बीज है। प्रेम का बीज प्रेम नहीं है, प्रेम का बीज द्वेष ही है।

आपको घर में सभी के साथ प्रेम है, लेकिन आपको द्वेष नहीं हो तब समझना कि फिर से बीज नहीं गिरेगा। और यदि द्वेष हो जाए तो बार-बार उस पर प्रेम आता रहेगा। फिर भी इस ज्ञान के बाद वैसा, नया क़रार उत्पन्न नहीं होगा। नए क़रार के बारे में आप समझ जाओ। इन सब में और गहरे उतरेंगे तो यह तो बहुत गहरा साइन्स है और शोर्ट साइन्स है। सिर्फ नया क़रार समझ गए न (आप) सब? नया क़रार जो पिछले, पहले के पूर्व अभ्यास के कारण उत्पन्न हो जाता है, धक्का लगने से, वहाँ खुद के शुद्धात्मा का भान रहना चाहिए, तो बहुत हो गया।

ज्ञान वही कहलाता है कि जिसमें मोह बिल्कुल भी नहीं हो। मोह सब से बड़ा क़रार है। मोह तो मूर्छा कहलाता है। लेकिन गलत पर द्वेष नहीं होना चाहिए, अच्छे पर राग नहीं होना चाहिए। यदि वैसा हो तो आप चंदूभाई को डाँटना। ऐसे डाँटोगे न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ जी।

**दादाश्री :** बस, इतना ही भयस्थान है, और कोई भयस्थान नहीं है। आपको बेटियों की शादी करवानी हो तो करवाना, बच्चों की शादी करवाना, पगड़ी पहनकर शादी करवाना, उसमें मुझे कोई हर्ज़ नहीं है, उसकी ज़िम्मेदारी मैं लेता हूँ। जैसे कपड़े पहनने हों पहनना। इन बहनों से भी मैं कहता हूँ कि जितनी साड़ियाँ लानी हों उतनी लाना, उसमें कोई परेशानी नहीं है लेकिन इतनी ही परेशानी है कि किसी को देखकर मन में क़रार नहीं हो। यदि उसके साथ क़रार से बंध गए, तो ऐसे-वैसे क़रार हो जाएँगे कि यदि वह अधोगति में जाएगा तो हमें भी *निकाल* करने के लिए वहाँ पर जाना पड़ेगा, यानी ऐसे उल्टे क़रार हो जाएँगे।

## वे क़रार, पूर्ण होते हुए क़रार

**प्रश्नकर्ता :** खुद के छोटे-छोटे बच्चे हों, उन पर प्रेम होता है और मोह होता है तो?

**दादाश्री :** उसमें हर्ज़ नहीं है। आपके बच्चों के प्रति आपको प्रेम रहे उसमें हर्ज़ नहीं है। वह प्रेम क़रारी प्रेम नहीं है, वह प्रेम क़रार पूरे करने के लिए है।

आप आराम से बच्चों के सिर पर हाथ फेरना, कहना, बैठ जा साथ में। उसे छाती से भी लगाकर दबाना, उसमें हर्ज़ नहीं है। वे क़रार तो पूरे करने ही हैं। लेकिन नया क़रार नहीं होना चाहिए। ये नये क़रार, इतना ही भयस्थान है। नहीं तो यह ज्ञान पूरी तरह से मोक्ष देनेवाला है, यहीं से मोक्ष दिया हुआ है।

## छूटने के क़रार है निकाली

**प्रश्नकर्ता :** जैसे-जैसे इन्सान के संबंधों के प्रवाह आते हैं, वैसे-वैसे बीच-बीच में अच्छे-बुरे लोग, पसंद हो या न हो, उनके साथ हम क़रार करते ही जाते हैं कि इनके साथ क़रार करने जैसा है, ऐसा समझकर वापस मन क़रार करने लगता है। नए-नए संबंध बढ़ते हैं निजी, व्यापार में सभी जगह पर और मन सभी संबंधों में क़रार करता ही जाता है।

**दादाश्री :** वह क़रार छोड़ रहा है, कर नहीं रहा है। वह छोड़ने के क़रार कर रहा है सभी कि अब मैं मुक्त हुआ। आपको क्या ऐसा लगा? बंधने के क़रार हो रहे हैं ऐसा लगा?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, 'यहाँ पर अच्छा लग रहा है,' ऐसा दिखता है न।

**दादाश्री :** वह छूटने के क़रार कर रहा है कि अब हम मुक्त हुए भाई। अब देखो आपका निबट गया, आपका निबट गया। (आप) छूटे और छूटने के क़रार कर रहे हो।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं लेकिन दादा, वह तो जो अच्छा लगता है उसमें भी क़रार होते है, मन तो मनपसंद क़रार भी करता है कि ऐसा हो तो अच्छा।

**दादाश्री :** नहीं, वह जो क़रार है वह मुक्त होने के क़रार हैं कि 'भाई, अब छूट गए।' अपना सारा हिसाब चुक गया। और यह भाई (जिन्हों ने ज्ञान नहीं लिया है), यदि करे न तो वे सारे, बंधने के करार करेंगे।

## विवाह-वैधव्य, दोनों क़रार से ही

लोग वैधव्य का तिरस्कार करते हैं। अरे भाई, यह वैधव्य अपनी जगह पर शोभायमान है। यह तो अपने लोग जान-बूझकर इसे उल्टा कहते हैं, बाकी ये दोनों भी, दोनों शब्द ही है। विवाह और वैधव्य दोनों एक्ज़ेक्ट ही हैं। विवाह होने से पहले क्या था तेरा? विवाह होने से पहले? लोग यों ही वैधव्य कहते हैं। विवाह यानी क़रार होना और जब वह क़रार टूट जाता है, तब वैधव्य आता है। वैधव्य को 'क़रार टूट गया' कहें तो परेशानी नहीं है, लेकिन लोगों ने तो पुराने शब्द रखे हुए हैं न। उसमें भी फिर विधवा को परेशान करते रहते हैं। अरे, उसका क़रार टूट गया तो क्या वह गुनाह है? किसी भी बारे में क़रार टूट ही सकता है न! तो इस क़रार को देखो न!

## ऐसे जगत् में क़रार कैसे पुसाए

घड़ीभर के लिए भी मिलते हैं न, तुरंत सभी कहते हैं कि मुझे आपके बिना अच्छा नहीं लगता। अच्छा हुआ कि हम मिले हैं, ऐसी सब बाते करते हैं। वापस आधे घंटे बाद जाने लगते हैं। अरे, अभी तो कह रहा था कि आपके बिना अच्छा नहीं लगता और अब जाने लगा वापस? लेकिन जाने ही लगते हैं। नहीं जाते? हमें लगता है कि हमारे पास से अब जाएँगे ही नहीं लेकिन आधे घंटे में तो जाने लगते हैं, पूछता करता भी नहीं और जाने लगता है, 'मैं

जाऊँ,' कहता है। हमने जब से ऐसा देखा तब से वैराग्य आ गया।

तो ऐसे लोगों के साथ कैसे एग्रीमेन्ट, क़रार किया जाए? हम उनके साथ क़रार का पालन करें और वह अपने क़रार का पालन नहीं करता, तो फिर क्या होगा? इनके साथ क़रार कहाँ करें? और खुद के अंदर साम्राज्य है, भगवान का साम्राज्य है, खुद के अंदर। उस साम्राज्य को छोड़कर यहाँ बखेड़े में पड़ा और चाटने के लिए है क्या यहाँ पर? निरी जूठन, जूठन और जूठन।

**प्रश्नकर्ता :** संसार में व्यापार के लिए सारी भाग-दौड़ होती है, उसका क्या कारण है? क़रार?

**दादाश्री :** भौतिक सुख की इच्छा के बिना कोई भाग-दौड़ करता ही नहीं। क़रार पहले हो जाते हैं, उसके बाद ही भाग-दौड़ होती है।

## पुराने क़रार, जल्दी पूरे हो जाओ अब

अब नए क़रार खड़े नहीं होंगे, नए क़रार करने बंद कर दिए, लेकिन पहले के जो क़रार किए हुए हैं उनका क्या? तो कहे, 'उनका तो हम पेमेन्ट कर देंगे।' उसके अलावा और क्या चारा है। लेकिन अब नए क़रार नहीं करने हैं। अब जैसे-जैसे पिछले हिसाब आएँगे, वैसे-वैसे चुकाते जाएँगे।

पुराने क़रार हो और वे क़रार पूरे हो तो उसमें हर्ज़ नहीं है लेकिन नए क़रार उत्पन्न नहीं होने चाहिए। और पुराने क़रार, उन्हें पूरे करते समय मन में थोड़ा ऐसा रहना चाहिए कि, 'अब यह क़रार पूरे हो जाएँ जल्दी। जल्दी निबेड़ा आ जाए,' ऐसा भाव रहना चाहिए। जोखिम सिर्फ क़रार का है।

## करना *निकाल* उदयकाल आने पर

क्रमिक मार्ग में तो कहते हैं, 'यह चीज़ छोड़ देना, फलानी चीज़ छोड़ देना, यह छोड़ देना।' क्योंकि वहाँ पर कर्म खपाते-खपाते आगे बढ़ना है और अपने यहाँ तो *निकाल* कर देना है, गोडाउन में जो भी जमा है, इसमें कुछ नया उत्पन्न नहीं हो रहा है और क्रमिक मार्ग में तो उत्पन्न होता है और खपाना पड़ता है। उत्पन्न होता है और खपाना पड़ता है, यानी खपा-खपाकर आगे बढ़ना होता है। यहाँ पर उत्पन्न नहीं होता लेकिन बहुत सारे गोडाउन भर दिए हैं। अब गोडाउन खाली करने हैं, बस *निकाल* ही! और वह *निकाल* भी फिर उसके उदयकाल पर ही होता है। आपको कुछ भी नहीं करना है। उसमें जब भी उदयकाल अपने से हस्ताक्षर करवाएँ, तब *निकाल* कर देना है।

यह मार्ग निरंतर समाधि का है, लेकिन जहाँ-तहाँ क़रार करके आए हुए हो, उसका क्या? नागदेवी स्ट्रीट का, अब्दुल रहमान स्ट्रीट का, सभी तरह-तरह की स्ट्रीट का क़रार करके आए हुए हो, तो क्या हो सकता है?

जहाँ जाते हैं वहाँ पर कहे, 'यहाँ आओ भाई,' तब कहे, 'अरे भाई मैंने तो ज्ञान लिया है,' 'अरे, ज्ञान भले ही लिया लेकिन आपको अब व्यापार नहीं करना होगा तो मत करना, लेकिन पिछला हिसाब तो चुका दो।' हमारा हिसाब तो बहुत सालों से चुक गया है। असल मज़ा तो चुकाने में ही आता है न? कोई शिकायत नहीं, कोई शोर नहीं, आवाज़ नहीं।

## जैसा हस्ताक्षर वैसा क़रार

हमारा कर्म हमारी मर्ज़ी के अनुसार होता है और आपको कर्म नचाते हैं। हमें स्वतंत्रता है, इसलिए हम चैन से बैठे रहते हैं। आपके कर्म भी धीरे-धीरे खत्म हो जाएँगे, बाद में आप बुलाओगे फिर भी नहीं आएँगे। वे फालतू नहीं हैं। आपने ही हस्ताक्षर किए थे इसलिए आए हैं, नहीं तो वे आते ही नहीं न क़रार (कॉन्ट्रैक्ट) पर जैसे हस्ताक्षर किए हैं, उलझनवाले हैं तो वैसा आएगा और साफ-सुथरे होंगे तो साफ-सुथरा आएगा। अरे, सत्संग में से भी उठाकर ले जाए। चारा ही नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** संबंध रखा वह राग है, इसलिए बुलाते हैं न?

**दादाश्री :** वह सब राग और द्वेष ही है। लेकिन पहले हस्ताक्षर कर दिए हैं, तभी उसे राग उत्पन्न होता है, नहीं तो कोई नाम देनेवाला नहीं है!

इस जन्म में कुछ ही हस्ताक्षर माने जाएँगे। आप जितना मानते हो उतने हस्ताक्षर नहीं हैं। हस्ताक्षर तो टाइप होने के बाद फिर से टाइप (पहले का हस्ताक्षर और फिर अभी के हस्ताक्षर) होता हैं, तब हस्ताक्षर माने जाते हैं। इसलिए उतने सारे नहीं हैं।

## प्रतिस्पंदन आएँ वहाँ रहना जागृत

यह ज्ञान, नये क़रार नहीं बंधे ऐसा ज्ञान है, लेकिन फिर भी अक्रम विज्ञान है न, इसलिए आपको पिछले देहाध्यास के प्रतिस्पंदन आते रहेंगे। देहाध्यास चला गया है लेकिन देहाध्यास के प्रतिस्पंदन आते रहेंगे। आपको पता चलेगा तुरंत ही कि यह भूल हो गई। अत: इतने भयस्थान में सावधान रहना। आपको समझ में आया यह?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ

**दादाश्री :** 'मैं कर्ता हूँ,' अब क्या आपको ऐसा लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** स्वप्न में भी नहीं।

**दादाश्री :** क्या बात कर रहे हो? तो लोग कहते हैं न कि हम चला रहे हैं? जो चल रहा है उसके लिए कहते हैं कि हम चला रहे हैं। तू चला रहा है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** अब बंद हो गया और अज्ञानता में भी खुद वास्तव में चलाता ही नहीं है न!

**दादाश्री :** नहीं चलाता, फिर भी वह ऐसा मानता है कि चला रहा हूँ। मानता है न?

**प्रश्नकर्ता :** वह मानता है इसलिए अगले जन्म के लिए बंधन होता है न!

**दादाश्री :** मानता है इसलिए यह कायम है न! मानता है इसलिए हस्ताक्षर कर देता है, 'मैं चला रहा हूँ। 'मैंने किया' ऐसे हस्ताक्षर कर देता है तो ज़िम्मेदार है वर्ना यदि हस्ताक्षर नहीं करे तो कोई हर्ज़ नहीं है। यहीं से ये सारी ज़िम्मेदारियाँ शुरू होती हैं। ये मुझ से कहते है, 'अब ज़िम्मेदारियाँ नहीं लेंगे' मैंने कहा हस्ताक्षर किए थे? तब कहता है, 'नहीं, नहीं किया।' तब मैंने कहा, 'कोई हर्ज़ नहीं, ज़िम्मेदारी नहीं है।' तूने किए थे हस्ताक्षर?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं किए।

**दादाश्री :** हाँ, तब तो फिर ज़िम्मेदारी टल गई है न। कर्तापन गया मतलब ममता गई, हमारी खुद की ममता गई, लेकिन पहले के क़रार किए हुए हैं इसलिए सामनेवाले की ममता अभी तक है! सामनेवाले लोगों के साथ जो क़रार किए हुए हैं, वे क़रार पूरे तो करने पड़ेंगे न? 'वह' व्यक्ति यदि छोड़ दे तो हर्ज़ नहीं है, परंतु हिसाब चुकाए बिना कौन छोड़ देगा?

## हिसाब तो चुकाने ही पड़ेंगे न

**प्रश्नकर्ता :** यदि मोक्ष नहीं होगा तो फिर से वापस आना पड़ेगा न?

**दादाश्री :** आना पड़े, तब भी एक-दो जन्म के लिए ही! लेकिन मुख्य तो क्या है? कि अपनी तरफ के क़रार पूरे हो जाने चाहिए। उनकी तरफ के क़रार भले ही रहें, उनकी तरफ के क़रार तो वे पूरे करेंगे, परंतु आपकी तरफ के बीवी-बच्चों के, सब के हिसाब तो चुकाने पड़ेंगे न?

## गड़बड़ करनेवाले का *निकाल* करना पहले

सिर्फ उस घड़ी वह क़रारवाला आए तब कहना, 'पधारिए अब दादा मिल गए हैं, अब सभी

क़रार मुझे पूरे करने हैं। आप पेमेन्ट ले जाओ। और भी ले जाओ, अभी चार लोग ही क्यों आए हैं? रात को बारह बजे तक पेमेन्ट करूँगा, लेकिन लेकर जाओ, अब।' पेमेन्ट किए बगैर चारा ही नहीं है और वे दखल देनेवालों में से हैं इसलिए दखल देनेवालों का पहले *निकाल* करना चाहिए।

आपसे कहें कि, 'खाना खाने चलो, भूख लगी है न?' तब कहना, 'भैया, इन दखल देनेवालों का *निकाल* करने दो न, फिर आराम से खाना खाने बैठता हूँ।' मतलब यह दखल निकल जाने के बाद सही मानों में पुरुषार्थ होगा।

जिस रास्ते से हमारी दखल निकल गई हैं न, वही रास्ता आपको बतलाता हूँ। हमारी सभी दखलें निकल चुकी हैं, उन सभी को देखा है मैंने। इसलिए मैंने आपको यह रास्ता बताया है। इसलिए दखल को लेकर घबराना नहीं। जब वह पेमेन्ट चुकाने का समय आए तब ऐसा कहना, 'आओ, जल्दी पेमेन्ट ले जाओ, आ जाओ।' आपने जो क़रार किया, उसे पूरा करना पड़ेगा न? यदि तू कहे कि, 'मेरे साथ ऐसा हुआ। अब मेरी सास मुझे परेशान करती है।' अरे! सास के साथ ऐसा क़रार है, उसे पूरा कर न? यह सास थोड़े ही परेशान कर रही है? यह तो क़रार ही किया हुआ है। जैसा क़रार किया होगा, वह क़रार पूरा तो करना पड़ेगा न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

## क़रार पूरे करने हैं आज्ञापूर्वक

**दादाश्री :** यह सब आपका क़रारी माल है। इसमें आपका शुद्ध उपयोग चला नहीं जाता। जैसे-जैसे समभाव से *निकाल* होता जाएगा, वैसे-वैसे संयम बढ़ता जाएगा। संयम को ही पुरुषार्थ कहा है। और जैसे-जैसे संयम बढ़ता जाए, वैसे-वैसे *निकाल* जल्दी हो जाता है। ऑटोमेटिक सब होते-होते अंत में 'केवलज्ञान' पर आ जाता है।

'आपको' कुछ भी नहीं करना है। आपको तो तय करना है कि, 'मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना है' और यदि आज्ञा पालन नहीं हो सकें तो उसकी भी चिंता नहीं करनी है। आपको ऐसा लगे कि मेरी सास लड़ती है, तो वे दिखें उससे पहले ही मन में दृढ़ निश्चय करना कि, ''मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना है और इनके साथ 'समभाव से *निकाल*' करना ही है''। फिर समभाव से *निकाल* नहीं हो पाया तो आप उसकी जोखिमदार नहीं हो। आप आज्ञापालन की अधिकारी। आप अपने निश्चय की अधिकारी हो, उस कार्य के परिणाम की अधिकारी आप नहीं हो। आपका निश्चय होना चाहिए कि मुझे आज्ञा-पालन करना ही है, फिर पालन नहीं हो पाए तो उसके लिए आपको खेद नहीं करना है। लेकिन मैं आपको बताऊँ उस तरह प्रतिक्रमण करना। अतिक्रमण किया है, इसलिए प्रतिक्रमण करना। इतना सरल, सीधा, सुगम मार्ग है, उसे समझ लेना है।

## संसार के संबंधों में से छूटने के लिए

**प्रश्नकर्ता :** दोषों के प्रतिक्रमण करने के लिए यदि हम रोज़ नौ कलमें बोलते रहें तो उसमें शक्ति है न?

**दादाश्री :** आप जो नौ कलमें बोलते हो वह अलग है और इन दोषों के प्रतिक्रमण करते हो, वह अलग है। जो दोष हो जाएँ, उनके प्रतिक्रमण तो रोज़ ही करने हैं।

**प्रश्नकर्ता :** ये जो नौ कलमें दी हैं वे विचार, वाणी और वर्तन की शुद्धता के लिए ही दी हैं न?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं। उनकी इस अक्रम मार्ग में ज़रूरत ही नहीं है। ये नौ कलमें तो अनंत जन्मों से सभी के साथ आपके जो हिसाब बंधे हुए हैं, उन हिसाबों में से छूटने के लिए दी हैं। हिसाब साफ करने के लिए दी हैं।

यह तो अनंत जन्मों से लोगों के साथ जो खटपट हुई है, तो ये नौ कलमें बोलने से उन सभी ऋणानुबंध में से छूट जाओगे। लोगों के साथ जो तार बंधे हुए हैं, वे ऋणानुबंध आपको मोक्ष में नहीं जाने देते। तो उन तार को छोड़ने के लिए ये नौ कलमें है।

अर्थात्, ये जो नौ कलमें हैं, यदि वे बोलोगे तो तार छूटते जाएँगे। यदि ये बोलोगे तो आपके अभी तक के जो दोष हो चुके हैं न, वे सभी ढीले पड़ जाएँगे। और उन दोषों का फल तो मिलेगा ही लेकिन जली हुई डोरी जैसे हो जाएँगे, फिर वे ऐसे हाथ लगाते ही बिखर जाएँगे।

वह सब से बड़ा प्रतिक्रमण है। इन नौ कलमों में पूरी दुनिया का प्रतिक्रमण आ जाता है। यानी अच्छी तरह से करो। हम आपको दिखा देते हैं फिर हम अपने देश में चले जाएँगे न!

## प्रतिक्रमण के उपाय से, क़रार की पूर्णाहुति

**प्रश्नकर्ता :** महात्माओं की ऐसी स्टेज कब आएगी कि प्रतिक्रमण पूर्ण हो जाएँगे?

**दादाश्री :** यदि अटेक करना भूल जाएगा तो फिर प्रतिक्रमण करना भूल जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** पुराने दोषों के प्रतिक्रमण कब तक करने हैं?

**दादाश्री :** जब तक दोष बाकी है तब तक। और यदि अपने दोषों की वजह से सामनेवाले को दु:ख हो जाए, ऐसा हो जाए, तब ही कहना है कि, 'चंदूलाल, इनके प्रतिक्रमण करो।' वर्ना करने की ज़रूरत नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** इस जन्म में ऐसे दोष नहीं किए हों, परंतु भूतकाल में, पिछले जन्म में ऐसे दोष किए हों कि जिनके प्रतिक्रमण करके उनमें से छूट जाना हो तो किस तरह करना चाहिए? कब तक करना चाहिए?

**दादाश्री :** पिछले जन्म में दोष हुए हैं, उसका पता किस तरह चलेगा आपको?

प्रतिक्रमण तो लोगों के साथ आमने-सामने जो दोष हुएँ हों, उनके करने हैं। अर्थात् मिश्रचेतन के साथ जो दोष हुए हों, उन दोषों के लिए प्रतिक्रमण करने को कहता हूँ।

**प्रश्नकर्ता :** मिश्रचेतन में क्या-क्या आता है?

**दादाश्री :** मिश्रचेतन अर्थात् यदि कुत्ते को लात मारकर निकाल दिया तो 'उसके साथ बैर बंध गया,' ऐसा कहा जाएगा। रास्ते पर यदि किसी स्त्री को धक्का मार दिया तो वह भी मिश्रचेतन के साथ दोष किया कहा जाएगा। मिश्रचेतन के साथ हुए ऐसे एक-एक दोष को ढूँढकर आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करना।

बचपन से अब तक जिस-जिसके साथ दोष हुए हों, किसी को दु:ख दिया हो, किसी के लिए उल्टा शब्द बोला हो, किसी के साथ कषाय किए हों, झूठ और प्रपंच किए हों, या फिर हिंसा संबंधी दोष हों; बचपन में बिल्ली को मारा हो या फिर बंदर पर ढेला फेंका हो या फिर वाणी से हिंसा की हो या कपट किए हों, कोई लोभ किया हो, मान में पड़े हों, धर्म में (साधु-संतों की) विराधना की हो, तो उन सभी का प्रतिक्रमण करते-करते आगे बढ़ना। इसके अलावा अब्रह्मचर्य संबंधी *अणहक्क* (बिना हक़ का) का भोग भोगा हो और किसी मिश्रचेतन के प्रति विषय का विचार आया हो या और कोई दोष किए हों, बचपन से अभी तक के उन सभी दोषों को याद कर-करके धोते रहना। जगत् जिसकी निंदा करे, जहाँ पर निंदा हो ऐसा कुछ भी हुआ हो तो उसके फल स्वरूप नर्क का अधिकारी बनता है, अत: उन सभी का प्रतिक्रमण कर लेना। यह प्रतिक्रमण आज्ञा सहित है, उससे सब धुल जाएगा। मनुष्य से क्या कुछ नहीं हो सकता? लेकिन आज्ञा का पालन किया तो साफ हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** भूलें पता न चले तो?

**दादाश्री :** तो दादा को याद करके कहना, 'हे दादा भगवान, अब याद नहीं आ रहा है।' तो फिर वापस याद आने लगेगा। जो-जो दोष किए होंगे, उन दोषों को याद करके और भगवान की साक्षी में माफी माँगना, इतना करना। हो पाएगा न इतना?

**प्रश्नकर्ता :** हो पाएगा। जितने याद आएँगे, उन सभी के प्रतिक्रमण कर दूँगा।

**दादाश्री :** जब तक याद आएँ उतने समय तक सब कर लेना। जिसकी इच्छा है, जो सरल है, उसे याद आए बगैर रहेगा ही नहीं। और भगवान के मार्ग में सरलता, वही मोक्ष का सरल रास्ता है, उच्च रास्ता है। यदि सरल नहीं हुआ तो भगवान के मार्ग में है ही नहीं।

इतना करना। सभी कुछ याद कर-करके करना। जितने दोष दिखेंगे उतने दोष खत्म हो जाएँगे। अब खुद के अंदर सुख शुरू हो गया है, लेकिन पूर्व के मिश्रचेतन के साथ जो हिसाब बाकी होंगे, वे दावा करेंगे। और ऐसे मार खाकर सीधे होने के बजाय मिश्रचेतन के साथ हुए दोषों की माफी माँगते ही रहो तो हल्के हो जाओगे। बच्चों के साथ, पत्नी के साथ, फादर, मदर वे सभी मिश्रचेतन ही हैं। उन सभी के प्रतिक्रमण करना।

**प्रश्नकर्ता :** मैंने किताब में पढ़ा हुआ है कि संख्यात-असंख्यात जन्मों के प्रतिक्रमण करें तो साफ हो ही जाता है। पिछले जन्म में जो दोष हो गए हैं, उनका?

**दादाश्री :** पहले कुछ दोष हो चुके हों तो वह कोई गप्प नहीं हैं। वह तो यदि कोई अंदर क्लेम करता हुआ आए, कुछ क्लेम लेकर आए, कागज़ लेकर आए तो समझ जाना कि यह पिछला हिसाब है। अभी का इस बार का नहीं लगता, पहले का लगता है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन इस तरह क्लेम लेकर आए हुए दोषों के भी प्रतिक्रमण करने हों तो बोलें तो प्रतिक्रमण करना होगा?

**दादाश्री :** क्लेम करता हुआ आए तभी करना है। क्लेम नहीं करे तो उससे कोई लेना-देना नहीं है। यदि क्लेम है उसी का प्रतिक्रमण करना चाहिए।

## करने हैं क्लेम के निराकरण, ज्ञान से

जो क्लेम करता हुआ आए, उसका निवारण हो सकता है। क्लेम ही नहीं करे तो? इसलिए क्लेम करता हुआ आए, उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए। दूसरा, अटेक लेकर आया है उसका ही प्रतिक्रमण करना, दूसरे नहीं। कोई मन में याद आता रहता हो, जिसकी तरफ मन बिगड़ता रहता हो, उसके प्रतिक्रमण करना। जगत् सारा निर्दोष है ही, लेकिन निर्दोष दिखता नहीं है, उसका क्या कारण है? वह आपके अटेकवाले स्वभाव के कारण है। आपको गालियाँ दे वह भी निर्दोष है, मारे वह भी निर्दोष है, नुकसान करे वह भी निर्दोष है। क्योंकि आपका ही हिसाब है यह सब। आपका हिसाब आपको वह वापस दे रहा है। अगर आप वापस उसे दोगे तो फिर नया हिसाब बाँधोगे। इसे आप 'व्यवस्थित' मानो, तो फिर बस! कह देना कि, 'लो, हिसाब साफ, चुक गया।' निर्दोष देखोगे, तो मोक्ष होगा। दोषित देखा, तब तो फिर आपने आत्मा देखा ही नहीं। सामनेवाले में यदि आप आत्मा देखो तो वह दोषित नहीं है।

## खुद की ही खड़ी की हुई दखलें

**प्रश्नकर्ता :** आज्ञा कठिन नहीं है, और पालन करने का प्रयत्न तो करते हैं लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता है कि आज्ञा में नहीं रह पाते।

**दादाश्री :** नहीं रहा पाते, वह आपकी इच्छा है ही नहीं। नहीं रहा जाता मतलब किसी की दखल

है। अब मैं क्या कहता हूँ, एक ओर इस जगत् में कोई आप में दखल करनेवाला है ही नहीं, लेकिन आपने पहले, यह जो दस्तखत कर दिए हैं, वे शोर मचाते हैं, उनकी दखल हैं। दस्तखत किए थे या नहीं किए थे, ज्ञान होने से पहले?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** ये आपकी, खुद की ही खड़ी की हुई दखलें हैं और वही दखल करते हैं। उन दखलों का अंत तो आना ही चाहिए। तो उनको *निकाल* करके फिर से दस्तखत कर देने पड़ेंगे।

आप सभी पुरुषार्थ के लिए तैयार हो ही। मैं जानता हूँ कि पुरुषार्थ कर सकें ऐसे हों। फिर भी पुरुषार्थ नहीं हो पाता, उसका क्या कारण है? पहले जो दस्तखत किए थे, क़रार किए थे, वे क़रार परिपक्व होने पर सुबह आकर खड़ा रहता है। 'अरे! तू क्यों आया? अब मैं सुख में पड़ा हूँ।' तब कहता है, 'नहीं, पहले हमारा हिसाब चुका दीजिए, बाद में सुख में पड़ना।'

## ऐसे करते-करते खत्म हो जाएँगे हिसाब

यह तो अपना ही हिसाब है, अपने ही खाते हैं और अपने ही हस्ताक्षर हैं। मतलब कोई आपके हस्ताक्षरवाला कागज़ दिखलाए, तब उसे कहना होगा कि 'ले जा, भाई।' बारह-सौ के हस्ताक्षर होंगे तब दो-सौ दोगे तो उतने कम हुए, हज़ार बाकी रहेंगे। फिर दो-सौ दोगे, तो आठ-सौ रहेंगे। ऐसा करते-करते जब कुछ भी नहीं रहें, तब यदि आप उन लोगों से कहें कि, 'अब ले जाओ?' तब वे कहेंगे, 'अब क्यों ले जाएँ?' अब हमारा उधार ही नहीं है न। आप उसे कहो कि 'तू दु:खिया है तो आ जा न, ज़्यादा माँग न।' तब वह कहेगा कि 'नहीं, ऐसे तो कैसे आ सकते हैं? कुछ आपका और मेरा हिसाब हो, तो मैं आ सकता हूँ न। पाँच रुपये भी आपके बाकी हों, तो मैं पीछे पड़ूँगा न। लेकिन जहाँ कुछ लेना भी नहीं है और देना भी नहीं है, वहाँ कैसे पीछे पड़ूँ?' मतलब हिसाब नहीं होगा तो कोई आएगा ही नहीं, ऐसा कानूनन जगत् है।

## देखो-जानो, तन्मयाकार हुए बिना

पूरा जगत् अवस्था में ही तन्मयाकार रहता है? अज्ञानी की समझ कैसी रहती है? अवस्था में ही तन्मयाकार। जो अवस्था उत्पन्न हुई, उसीमें तन्मयाकार। गरीबी की अवस्था उत्पन्न हुई तो गरीबी में। श्रीमंत की अवस्था उत्पन्न हुई तो उसमें तन्मयाकार। ऐसे साँड की तरह घूमता है। यानी तन्मयाकार होकर घूमता रहता है। बुखार आए तो कहेगा, 'मैं क्या करूँ? चला नहीं जा रहा'। अरे बेकार ही, 'चला नहीं जा रहा, चला नहीं जा रहा' ऐसा कहकर बल्कि कमज़ोर बन जाता है। आत्मा का स्वभाव है कि जैसा बोले वैसा हो जाता है और बुखारवाला तो बोलता है, 'चला नहीं जाता, पैर तो चल ही नहीं रहे।' फिर पैर समझ जाते हैं कि 'हमें कह रहे हैं कि चलते नहीं हैं। तो कोई डाँटनेवाला नहीं है,' यदि हम कहें कि 'नहीं क्यों चलोगे? चलो आगे!' ऐसे दो-एक बार ठपकारोगे तो अपनेआप चलेंगे। नहीं क्यों चलेंगे। क़रार किया है, क़रार पूरा नहीं हुआ है अभी तक। फाइल नं-१ को खिलाते हैं, पिलाते हैं तो चलेगा क्यों नहीं? यह कैसी बात?

क़रार के अनुसार चलना पड़ेगा है न? चलना है उसे, हमें 'देखते' रहना है। हम हमारा फ़र्ज़ नहीं निभाएँ तो कहना। तुम्हें चलना है, हम 'देखेंगे!'

## साफ करने पर, होगी क़रारों से मुक्ति

ज्ञानीपुरुष ने 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसी आपकी श्रद्धा तोड़ दी। वह सब तोड़ दिया पूरा ही। 'मैं चंदूभाई हूँ,' 'मैं इसका भाई हूँ, इसका चाचा हूँ,

इसका मामा हूँ, इसका पति हूँ,' कितना कुछ तोड़ दिया चारों ओर से। अब 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वहाँ तक पहुँचे और अब साफ करते-करते अंदर तक जाना है। तब फिर बिगाड़ किसने किया था? तब कहे, 'पहले हमने ही किया था बिगाड़।' और बहुत साल पड़े रहने पर उन बर्तनों को ज़ंग लग जाता है न? भीतर में अब साफ करने हैं। खाना-पीना-सोना, सत्संग में बैठना, मगर अपना चित्त निरंतर शुद्धि करने में रहना चाहिए। शुद्धि करने लगे, उसका नाम उपयोग। क्या सभी रूम साफ करने शुरू कर दिए?

## शुद्धता की प्राप्ति ज्ञाता-दृष्टा पद से

**प्रश्नकर्ता :** दादा, हमें इस शरीर के एक-एक परमाणु को शुद्ध करने के लिए, इसे जो भी हो उसे देखते रहें, ज्ञाता-दृष्टा के रूप में, तो शुद्ध हो जाएगा या प्रतिक्रमण करेंगे तो शुद्ध होगा?

**दादाश्री :** ज्ञाता-दृष्टा से शुद्ध होगा।

**प्रश्नकर्ता :** तो प्रतिक्रमण से क्या होता है दादा?

**दादाश्री :** इस प्रतिक्रमण से इफेक्ट में क्या होता है, कि सामनेवाले को जो दु:ख हुआ है, उसका जो असर रह जाता है, वह प्रतिक्रमण से धुल जाता है। जहाँ तक हो सके वह असर नहीं होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन क्या प्रतिक्रमण से परमाणु शुद्ध नहीं होते, दादा?

**दादाश्री :** नहीं, प्रतिक्रमण तो इन दोषों से छूटने के लिए हैं। उससे परमाणु शुद्ध नहीं होते। परमाणु तो कब शुद्ध होंगे कि उन्हें 'देखेंगे' तभी। *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) कहता है कि, 'आपने बिगाड़ा था तो जैसा था, वैसा कर दो। वर्ना आपका छुटकारा नहीं होगा।' तब कहें, 'छुटकारा किस तरह होगा?' तब कहें 'जिस अज्ञानता से आपने देखा था, उससे हम आपके साथ बंध गए और अब ज्ञान से देखो, तो हम छूट जाएँगे।'

उन परमाणुओं को आपने ही खराब किया है उन पर गिलेट चढ़ाया है। पीतल पर सोने का गिलेट चढ़ाया और उसे सोना कहलवाया, इसलिए आपको अब उसे ज्ञान से निकालना है। अज्ञान की वजह से भरे थे, अब ज्ञान से गलन करने हैं ताकि परमाणुओं का हक़ और दावा न रहे आप पर। अभी तक हक़ और दावा है। वे परमाणु कहते हैं कि 'आपको तो दादा ने शुद्ध बना दिया और आप शुद्ध हो गए लेकिन ऐसे नहीं छूट पाओगे। आपने हमें बिगाड़ा है, अशुद्ध किया है। अशुद्ध करने के आप निमित्त हो इसलिए अब हमें शुद्ध कर दो तो आप भी मुक्त और हम भी मुक्त।' अत: शुद्ध देखना है।

**प्रश्नकर्ता :** शुद्ध तो हमें चंदूभाई को ही करना है न?

**दादाश्री :** 'आप' तो शुद्ध हैं ही। आप शुद्धात्मा हैं ही। अब चंदूभाई क्या कहते हैं कि 'मैं भी शुद्ध हो गया हूँ।' तब कहे, 'नहीं, अभी तो बाहर का सब धुला है मगर अभी अंदर तो सारा कचरा पड़ा है, उसे बुहार दोगे ताकि शुद्ध हो जाओगे।'

मतलब ये तो सारे कषाय भरे हुए है वे निकलते ही रहेंगे, जितने अंदर भरे हैं उतने। आप उसे देखा करो और फिर चंदूभाई से कहना, 'प्रतिक्रमण कीजिए, फिर से चरणविधि बोलिए।' इतना ही, और कुछ नहीं। आपको 'देखकर' *निकाल* करना है। उसे 'साफ किया' कहते हैं। आप घर में जाओ तो वे कहेंगे, 'साहब, अब सब हो गया, अब इसका क़रार कीजिए।' तब कहना, 'नहीं, अभी तो यह बाकी है' वह करता रहे और आप दिखलाते रहो।

## समभाव सजाए शुद्धत्ता

हर एक कार्य का गलन होते समय उसका शुद्धिकरण करके निकालना और उसका समताभाव से *निकाल* करना है।

समभाव से *निकाल* करने से परमाणु शुद्ध हो जाते हैं। उस समय शुद्धात्मा देखने से परमाणु शुद्ध हो जाएँगे। ये परमाणु तो निकलते ही रहेंगे निरंतर, फिर भी यदि शुद्ध होकर जाएँ तो फिर वापस दावा नहीं करेंगे। ऐसा करने से परमाणु-परमाणु में सेटअप हो जाएँ और आत्मा-आत्मा में सेटअप हो जाए तो फिर वह मोक्ष कहलाता है। तब वापस बंधन में आने का प्रश्न ही नहीं रहता। एक बार *अबंध* (बंधन रहित) हो चुकी चीज़ का कोई बंधन नहीं रहता।

अर्थात् ज्ञान से खत्म किए बिना वे दोष जाएँगे नहीं। अज्ञान से बाँधे हुए ज्ञान से अलग होंगे। ज्ञान अर्थात् देखना। अत: जितना देखा उतना अलग हुआ, फिर भले ही वह कैसा भी हो।

## 'भावना' से भावशुद्धि

अपना यह 'अक्रम विज्ञान' है। पहले की जो आदतें पड़ी हुई हैं, उनकी वजह से यह सब होता है। इन सभी से छूटा जा सके ऐसा नहीं है लेकिन इनसे (अक्रम विज्ञान से) सामनेवाले के साथ के और सामनेवाले के सभी क़रार खत्म हो जाते हैं। तो इसके लिए शक्ति माँगो। ऐसा बोलने से क़रार खत्म होते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** आपने तो कहा है कि, 'हुक्का पीता जाता हूँ लेकिन अंदर चल रहा होता है कि नहीं पीना चाहिए, नहीं पिलाना चाहिए या पीनेवाले के प्रति अनुमोदना...

**दादाश्री :** हाँ, यानी उसका इतना ही अर्थ है कि 'हम इससे सहमत नहीं है' ऐसा कहना चाहते हैं तो फिर मुक्त ही हैं। और जब हुक्का अपने आप छूट जाएगा तब ठीक है। अब हम इससे चिपके हुए नहीं हैं, वह हमसे चिपका हुआ है। उसकी मुद्दत पूरी हो जाएगी तब वह चला जाएगा, ऐसा कहना चाहते हैं। एक तरफ हुक्का पीता जाए और दूसरी ओर भावना बोलता रहे तो पिया हुआ खत्म हो जाएगा और भाव की शुरूआत हो गई।

तब लोग कहते हैं कि 'आइए साहब, आइए साहब।' वहाँ पर भी मन में क्या होता है कि 'अभी कहाँ से आ गया?' जबकि ये क्या कहते हैं? हुक्का पी रहे हैं लेकिन 'यह ऐसा नहीं होना चाहिए।' कहें तो वह इससे उल्टी बात कह रहा है। बाहर 'आईए पधारिए' कहते हैं, और फिर अंदर कहता है कि 'ये कहाँ से आ गए?' तो वह सुधरे हुए को बिगाड़ रहा है और हम बिगड़े हुए को सुधार रहे हैं।

**प्रश्नकर्ता :** पूरे 'अक्रम विज्ञान' का आश्चर्य ही यह है कि बाहर बिगड़ा हुआ है और अंदर सुधार रहा है।

**दादाश्री :** हाँ, अत: संतोष रहता हैं सभी को कि भले यह बिगड़ गया तो बिगड़ गया, लेकिन अब नई खेप तो अच्छी तैयार होगी। एक खेप बिगड़ी तो वह गई लेकिन नयी अच्छी बनेगी न? जबकि वे लोग क्या कहते हैं? 'इसी खेप को सुधारना हैं।' अरे, छोड़ ना! जाने दे न! नया भी बिगड़ जाएगा। यह तो खेप भी गई और तेल भी गया।

**प्रश्नकर्ता :** अभी जो बिगड़ा हुआ है, आज हम उसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। वह पिछले जन्म का परिणाम है।

**दादाश्री :** हाँ, अभी हम ज़िम्मेदार नहीं हैं। अभी वह सत्ता किसी और के हाथ में है। ज़िम्मेदारी अपने हाथ में नहीं है न! यह तो बदलनेवाला नहीं है तो फिर हाय-हाय क्यों करते हो बगैर बात के?

लेकिन वहाँ पर तो फिर गुरु महाराज भी कहेंगे, 'ऐसा नहीं हो तो घुसने नहीं दूँगा।' तब शिष्य क्या कहता है, 'लेकिन साहब, मुझे करने की बहुत इच्छा है लेकिन हो नहीं पा रहा, तो मैं क्या करूँ?' यानी यह समझे बगैर ही अंधाधुंध चल रहा है।

**प्रश्नकर्ता :** यह तो जब प्रकृति बिल्कुल उल्टा-सीधा कर देती है न, तब उसे अंदर सफोकेशन (घुटन) होता है, ज़बरदस्त।

**दादाश्री :** अरे, यह सब तो ऐसा होता है कि पाँच-पाँच दिनों तक खाता नहीं है। अरे, वह गुनाह किसका और किसे मारता जा रहा है! पेट को क्यों मार रहा है? गुनाह मन का और मार रहा है पेट को। कहेंगे, 'तुम्हें खाना नहीं है।' तो यह क्या करे बेचारा? शक्ति चली जाएगी न बेचारे की। यदि उसने खाया होगा तो अन्य कोई कार्य कर सकेगा। इसलिए फिर लोग क्या कहते हैं, 'किसी के दोष का दंड किसी और को क्यों दे रहा है?' भैंस की गलती का दंड चरवाहे को क्यों दे रहा है? गलती भैंस की है, मन की है और इस चरवाहे का, बेचारे देह का क्या गुनाह है?

और बाहर झाड़ते रहने से क्या बदल सकेगा कुछ? जो अपनी सत्ता में हैं ही नहीं तो फिर बगैर बात के शोर मचाएँ तो उसका क्या अर्थ है? लेकिन अंदर सबकुछ झाड़ना-पोंछना पड़ेगा, अंदर का सबकुछ धोना पड़ेगा। यह तो बाहर का धो डालते हैं, गंगाजी में जाए तो भी देह को खंगालते रहते हैं। अरे, देह को खंगालकर क्या काम है? मन को खंगाल न! मन को, बुद्धि को, चित्त को, अहंकार को, इन सभी को, अंतःकरण को खंगालना हैं। इसमें कभी साबुन तक नहीं डाला फिर बिगड़ ही जाएगा न या नहीं बिगड़ेगा?

कम उम्र हो तब तक अच्छा रहता है बाद में दिनोंदिन बिगड़ता जाता है और फिर कचरा डलता जाता है। इसीलिए अपने यहाँ क्या कहा है कि तेरे आचार (आचरण) बाहर रखता जा और यह लेता जा। यह सब जो झूठ है वह बाहर रखता जा और इस नौ कलमों की भावना करता जा, तो आनेवाला जन्म हो जाएगा उत्तम।

**प्रश्नकर्ता :** जिन्हों ने यह 'ज्ञान' नहीं लिया हो वे लोग भी इसी तरह आचरण बदल सकते हैं न?

**दादाश्री :** हाँ, सबकुछ बदल सकते हैं। हर किसी को (यह कलमों) बोलने की छूट है।

**प्रश्नकर्ता :** कुछ उल्टा हो जाए तो बाद में उसे धोने के लिए यह कलमें ज़बरदस्त उपाय हैं।

**दादाश्री :** बहुत बड़ा पुरुषार्थ है यह तो यानी कि सब से बड़ा विज्ञान हमने बताया है यह। लेकिन अब लोगों को समझ में आना चाहिए न! इसलिए फिर आवश्यक कर दिया कि इतना आपको करना ही है। भले ही समझ में नहीं आए लेकिन पी जा न!

**प्रश्नकर्ता :** अंदर के रोग खत्म हो जाएँगे।

**दादाश्री :** हाँ, खत्म हो जाएँगे। 'दादा' कहते हैं 'पढ़ना,' यानी पढ़ना। बस इतना ही। बहुत हो गया। यह पचाने के लिए नहीं है, यह तो, पुड़िया घोलकर, पीकर फिर रोब से घूमने जैसा है।

**प्रश्नकर्ता :** क्या ऐसी बात है कि भाव करने से पात्रता बढ़ती है?

**दादाश्री :** वास्तविक पुरुषार्थ भाव ही है। बाकी की सभी बेकार बातें हैं। कर्तापद, वह तो बंधनपद है और यह भाव तो मुक्त करवानेवाला पद है। 'ऐसा करो वैसा करो फलाना करो,' तो लोग बंधे न उससे!

## प्रकृति के भागाकार, आत्मा के गुणाकार

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा है न कि अपनी जो

प्रकृति है उसका गुणा करोगे तो फिर बढ़ जाएगी। उसमें भाग लगाना चाहिए। प्रकृति में प्रकृति से भाग लगाना चाहिए, तो वह समझाइए।

**दादाश्री :** यानी यह (नौ) कलम बोलते रहें तो उसमें भाग लगेगा और वह कम होती जाएगी। ऐसी कलम बोलोगे तो फिर पौधा (दोषों का) अपने आप ही उगता रहेगा। यह कलम बोलते रहें तो कम होता जाएगा। इन्हें जैसे-जैसे बोलोगे न, तो अंदर जो प्रकृति में जो गुणाकार (वृद्धि हुई है) हो चुके हैं, वे टूट जाएँगे और आत्मा के गुणाकार होंगे और प्रकृति के भागाकार होंगे। यानी कि आत्मा पुष्ट होता जाएगा। नौ कलमें रात-दिन बोलते रहो। टाइम मिले, खाली टाइम मिला की बोलना। हमने तो सभी दवाएँ दे दी हैं, समझा दिया, फिर जो करना हो वह।

## क्लेम पूरे होने पर होगा मोक्ष

ये सारी बातें 'एक्सपीरीअन्स'वाली, अनुभववाली ही बता रहा हूँ। मेरे ज्ञान द्वारा बताए गए उपाय हैं, यदि आपने खुद नहीं किया हो न, तो मनुष्य को समाधान तो चाहिए न! वर्ना समाधान के बिना मनुष्य उलझ जाता है। लोगों को समाधान नहीं मिलता इसलिए उलझ जाते हैं, सभी उलझते हैं। तब फिर उलझन आए तब क्या करें? और यह दुनिया तो उलझन का ही कारखाना है! 'द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ।' यानी 'इटसेल्फ पज़ल' हो गया है यह!

इसलिए मैं कहता हूँ न, कि यह 'अक्रम विज्ञान' है! अत: जो तैयार नहीं हुए हैं, ऐसे लोगों को विज्ञान दिया है, यानी जो इसकी 'बाउन्ड्री' (हद) में नहीं आए हैं उन्हें! लेकिन वह भी पुण्य होंगे तभी प्राप्ति होती है न? इसलिए हमने कहा है कि व्यवहार में, इस तरह कार्य करवाओ कि सामनेवाले को किसी को भी दु:ख नहीं हो, ऐसा अपना व्यवहार होना चाहिए।

बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता। जगत् अकारण नहीं है। जहाँ पर अकारण हो जाए, वहाँ मोक्ष है। जहाँ सभी के 'क्लेम' पूरे हो जाएँ, वहाँ मोक्ष है।

**- जय सच्चिदानंद**


## पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत** ✦ **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
✦ **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
**USA** ✦ '**TV Asia**' पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)
**USA-UK** ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)

## पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत** ✦ **'साधना' पर हर रोज़ - शाम ७-३० से ८ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम**
✦ **'दूरदर्शन' पर गुजरात में सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ 'जरा जुओ जागीने' - नया कार्यक्रम**
✦ **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
✦ **'डीडी-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७-३० से ८ (मराठी में)
✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) '**SAHARA ONE**' पर सोम से शुक्र - सुबह ९ से ९-३० **EST** (गुजराती में)
**USA-UK** ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

## दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

**१९ मार्च :** अडालज त्रिमंदिर संकुल में पूज्य नीरू माँ की सातवी पुण्यतिथि का महोत्सव सुबह ६.३० बजे प्रभातफेरी से हुई। ७.०० बजे पूज्य नीरू माँ की समाधि पर उपस्थित महात्माओं ने सामूहिक प्रार्थना-चरणविधि-आरती की। पूज्यश्री ने समाधि पर दर्शन करने के बाद आशीर्वचन कहे। सुबह १०.०० बजे सत्संग हॉल में पूज्य नीरू माँ की नई स्पेशियल विडियो सीडी दिखाई गई, जिस में विविध प्रकार के टकोर करते हुए सत्संग का संकलन किया गया था। उसके बाद एक घंटे तक जगतकल्याणर्थे स्वरूप कीर्तन भक्ति की गई। शाम ४ बजे बहुत समय से आतुरतापूर्वक जिसकी प्रतिक्षा हो रही थी वह आप्तवाणी-१४ भाग-३, अंग्रेजी आप्तवाणी-४ और पूज्य नीरू माँ रचित भक्तिपदों की ऑडियो सीडी स्वरमणा-२६ का उद्घाटन पूज्यश्री के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर आप्तवाणी संबंधी दादा भगवान की विडियो और सर्मपण पद प्रस्तुत किए गए। उसके बाद आप्तसिंचन साधकों की छटवी बेच के ८ भाईओं और साधिकाओं की तीसरी बेच की १६ बहनों की समर्पण विधि हुई। साधक-साधिकाओं ने पूज्यश्री, माता-पिता, परिवार और महात्माओं के आशीर्वाद प्राप्त किए। दो आप्तकुमार साधक को आप्तपुत्र तथा तीन आप्तकुमारी साधिकाओं को आप्तपुत्री का पद दिया गया। रात को पूज्य नीरू माँ की समाधि स्थल पर पूज्यश्री की निश्रा में 'स्वरमणा' के गायक कलाकारों द्वारा विशेष भक्ति कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई। महात्माओं ने पूज्य नीरू माँ रचित पद सुनने का अद्‌भुत आनंद उठाया। पूरे दिन के दौरान करीब दस हज़ार महात्माओं ने इस कार्यक्रम का आनंद उठाया।

**२०-२२ मार्च :** 'दादा दर्शन' (अहमदाबाद) संकुल में पूज्यश्री की निश्रा में आप्तसिंचन की प्रथम दो बेच की साधिका बहनों के लिए विशेष तीन दिन की शिविर का आयोजन किया गया। सत्संग समय दौरान जिसमें पूज्यश्री से साधिकाओं ने जनरल और व्यक्तिगत तरह से उलझते हुए प्रश्न पूछकर समाधान प्राप्त किया।

**२६ मार्चः** पूज्यश्री ने शाम को सीमंधर सिटी (अडालज) से यु.के, जर्मनी, स्पेन सत्संग प्रवास के लिए प्रस्थान किया।

**२९ मार्च - २ अप्रैल :** इस साल पेकफिल्ड विस्तार में यु.के शिविर का आयोजन किया गया, जहाँ पर ज़्यादा महात्माओं का समावेश शक्य हो पाने से करीब ६५० महात्माओं ने भाग लिया। यह स्थल समुद्रतट से नज़दीक था। पूज्यश्री के सानिध्य में शिविर दौरान 'मानवधर्म' पुस्तक पर पारायण हुआ और विशेष टॉपिक पर सत्संग हुए। बालकों को भी प्रश्नों पूछने का अवसर प्राप्त हुआ। महात्माओं ने दादाई गरबा का अनुपम आनंद उठाया और चौथे आरे जैसे सुख का अनुभूति की।

**४-७ अप्रैल :** जर्मनी में लगातार तीसरे साल योजित दीपकभाई के कार्यक्रम में करीब २०० पुराने महात्मा आएँ। प्रथम दिन उनके लिए विशेष सत्संग हुआ। करीब २७५ नए मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। पूज्यश्री जहाँ पर रुके हुए थे वह निवासस्थान चारों ओर से बर्फ से आच्छादित था। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ बर्फ में इन्फोर्मल समय व्यतीत किया तथा महात्माओं को पूज्यश्री की ओर से बर्फ की प्रसादी की प्राप्ति हुई। पूज्यश्री ने वहाँ पर सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की विधि की तथा जर्मन महात्माओं के सत्संग स्थल की पर पहुँचे। जर्मन महात्माओं ने भी पूज्यश्री की निश्रा में गरबा का आनंद लूटा। भाषांतर हुई दादा की नई चार पुस्तकों का भी पूज्यश्री के कर कमलों से विमोचन हुआ।

**९-११ अप्रैल :** २००७ के बाद ६ साल बाद स्पेन में टेनेरिफ में पुनः पूज्यश्री के सानिध्य में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें २१० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। पूज्यश्री के सानिध्य में स्थानिक महात्माओं ने नज़दीक से इन्फोर्मल समय का आनंद लिया। विलेज सेन्टर में गरबा का आनंद उठाया गया और पूज्यश्री के साथ भोजन लेने का अपूर्व अवसर का आनंद उठाया। सालों पहले पूज्य नीरू माँ तथा पूज्यश्री से ज्ञान प्राप्ति किए हुए महात्माओं ने अपने खुद के ज्ञान संबंधी सुंदर अनुभव का वर्णन किया। पूज्यश्री ने वहाँ का एक हिन्दू मंदिर में भी सत्संग किया, जिसमें बहुत सारे सिंधी मुमुक्षु आए। टेनेरिफ में २०-२५ साल पहले स्थाई हुए एक सिंधी ग्रुप ने दादा के ज्ञान संबंधी पूज्य नीरू माँ तथा पूज्य दीपकभाई के टी.वी सत्संग कार्यक्रमों की जानकारी थी और ज्ञान प्राप्ति से पहले ही ज्ञान के सुंदर अनुभव शुरु हो गए थे। ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्हों ने दादाई मिशन में जुड़ने की प्रबल भावना प्रदर्शित की।

## आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

**हैदराबाद** **दिनांक** : 15 जून, **समयः** शाम 7-30 से 9-30 **संपर्क** : 9989877786
**स्थल** : कच्छी भवन, इडन बाग, रामकोटी, हैदराबाद.

**हैदराबाद** **दिनांक** : 16 जून **समयः** सुबह 10 से 12 **संपर्क** : 9989877786
**स्थल** : महावीर भवन, व्हाईट हाउस, फीलखाना, हैदराबाद.

**हैदराबाद** **दिनांक** : 16 जून **समयः** शाम 4 से 6 **संपर्क** : 9989877786
**स्थल** : श्री लक्ष्मीनारायण भवन, कच्छ कडवा पाटीदार समाज, एल.बी.नगर, हैदराबाद.

**अमरावती** **दिनांक** : 17 जून, **समय** : शाम 6 से 8-30 **संपर्क** : 9422915064
**स्थल** : टाउन होल, वनीता समाज के पास, राजकमल चौक, अमरावती.

**जलगाँव** **दिनांक** : 19 जून, **समय** : शाम 5-30 से 8 **संपर्क** : 9420942944
**स्थल** : रोटरी होल, गणपति नगर, जलगाँव.

**मुझफ्फरपुर** **दिनांक** : 19 जून, **समय** : शाम 6-30 से 8-30 **संपर्क** : 9939540790
**स्थल** : शिव मंदिर, दालसीघ सराई रोड के पास, गोपालपुर, ताराउरा, मुझफ्फरपुर.

**मुझफ्फरपुर** **दिनांक** : 20 जून, **समय** : सुबह 11 से 1 **संपर्क** : 9939540790
**स्थल** : बारीया बकुंथपुरी कोलोनी, बस स्टेन्ड के पास, मुझफ्फरपुर.

**नासिक** **दिनांक** : 20 जून, **समयः** शाम 6 से 8-30 **संपर्क** : 9420694848
**स्थल** : लेऊवा पाटीदार समाज वाडी, गंगाघाट के पास, पंचवटी, नासिक.

**औरंगाबाद** **दिनांक** : 21 जून, **समय** : शाम 5-30 से 8 **संपर्क** : 8308008897
**स्थल** : शास्त्रीनगर गृह, निर्वाण संस्था, गजानन मंदिर के पास, जवाहर कोलोनी, औरंगाबाद.

**पूणे** **दिनांक** : 22 जून, शाम 5 से 7-30 तथा 23 जून, सुबह 10-30 से 12-30 **संपर्क** : 90422660497
**स्थल** : होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर कोर्नर के पास, मार्केट यार्ड, पूणे.

**गुवाहाटी** **दिनांक** : 22-23 जून, **समय** और **स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क** : 9854047685

**नलबारी** **दिनांक** : 24 जून, **समय** : दोपहर 3 से 6 **संपर्क** : 9954875897
**स्थल** : युथ क्लब, धमधमा हाई स्कूल के पास, धमधमा, नलबारी.

**कटिहार** **दिनांक** : 25 जून, **समय** : शाम 4 से 6 **संपर्क** : 9534561618
**स्थल** : मनोकामना मंदिर, संग्राम चौक के पास, लाल कोठी रोड, कटिहार.

**पटना** **दिनांक** : 26 जून, **समय** : शाम 5 से 7-30 **संपर्क** : 9308574932
**स्थल** : कैलासपुरी रोड नं-1, केडिया हाउस के पास, हनुमान नगर, पटना.

**बख्तीयारपुर** **दिनांक** : 27 जून, **समय** : शाम 5 से 7-30 **संपर्क** : 9470083078
**स्थल** : सीढ़ी घाट मंदिर, पुलीस स्टेशन के पास, बख्तीयारपुर.

**पटना** **दिनांक** : 28 जून, **समय** : सुबह 10 से 12 **संपर्क** : 9934009911
**स्थल** : कुंदन चौधरी, AIMS होस्पिटल के पास, निकुंज पुलिस कोलोनी, छेडी टोला, वाल्मीफुलवारी, पटना.

**पटना** **दिनांक** : 28 जून, **समय** : शाम 5 से 7-30 **संपर्क** : 9234000235
**स्थल** : जैन भवन, गोविंद मित्रा रोड, पटना.

**कोलकाता** **दिनांक** : 29 जून, **समय** : शाम 5 से 7-30 **संपर्क** : 9330333885
**स्थल** : राजुभाई वसानी, 1 सरत बोस रोड, कोलकाता.

**कोलकाता** **दिनांक** : 30 जून, **समय** : सुबह 9-30 से 12 **संपर्क** : 9330333885
**स्थल** : विजयभाई शाह, 129 ए, एस.पी. मुखर्जी रोड, कोलकाता.

**कोलकाता** **दिनांक** : 30 जून, **समय** : शाम 5 से 7-30 **संपर्क** : 9330333885
**स्थल** : श्री कृपालुदेव मंदिर, 11 चक्रबेरिया लेन, कोलकाता.

## Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2013

**Contact no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232) &**
**email for USA - info@us.dadabhagwan.org, for Canada - info@ca.dadabhagwan.org**

| Date | Day | City | Session Title | From | To | Venue | Contact No. & Email |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12-Jun | Wed | San Jose | Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | Jain Center of Northern California, 722, South Main Street, Milpitas, California 95035 Tel# 4082626242 | Ext. 1024 northcalifornia@us.dadabhagwan.org |
| 13-Jun | Thu | San Jose | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 13-Jun | Thu | San Jose | **Gnanvidhi** | 6.30 PM | 9.30 PM | | |
| 14-Jun | Fri | San Jose | Follow-up Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | | |
| 15-Jun | Sat | Simi Valley | Satsang | 4.30 PM | 7.00 PM | Sutter Middle School, 7330 Winnetka Ave, Canoga Park, CA 91306 | Ext. 1017 simivalley@us.dadabhagwan.org |
| 16-Jun | Sun | Simi Valley | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 16-Jun | Sun | Simi Valley | **Gnanvidhi** | 5.00 PM | 8.00 PM | | |
| 17-Jun | Mon | Simi Valley | Follow-up Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | | |
| 21-Jun | Fri | Toronto | Aptaputra Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | Sringeri Vidya Bharati Foundation (Canada) 80 Brydon dr, Etobicoke - M9W 4N6 | Ext. 1006 toronto@ca.dadabhagwan.org |
| 22-Jun | Sat | Toronto | Satsang | 4.30 PM | 7.00 PM | | |
| 23-Jun | Sun | Toronto | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 23-Jun | Sun | Toronto | **Gnanvidhi** | 5.00 PM | 8.00 PM | | |
| 2-Jul | Tue | New York | Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | The Hindu Temple Society of NA, -AKA The Ganesh Temple, 45-57, Bowne Street, Flushing, NY 11355. | Ext. 1021 newyork@us.dadabhagwan.org |
| 3-Jul | Wed | New York | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 3-Jul | Wed | New York | **Gnanvidhi** | 6.30 PM | 9.30 PM | | |
| 4-Jul | Thu | New York | Follow-up Satsang | 9.30 AM | 12.30 PM | | |
| 5-Jul | Fri | New Jersey | Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | Edison Hotel 3050 Woodbridge Avenue (GPS Address 1173 King George Post Rd) Edison, NJ 08837 Tel: + 1 732 661 1000 \| Toll free 1 877 388 6956 | Ext. 1020 newjersey@us.dadabhagwan.org |
| 6-Jul | Sat | New Jersey | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 6-Jul | Sat | New Jersey | Satsang | 4.30 PM | 7.00 PM | | |
| 7-Jul | Sun | New Jersey | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 7-Jul | Sun | New Jersey | **Gnanvidhi** | 5.00 PM | 8.00 PM | | |
| 8-Jul | Mon | New Jersey | Follow-up Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | | |
| 9-Jul | Tue | Charlotte | Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | Hindu Center of Charlotte 7400 City View Dr Charlotte NC 28212 | Ext. 1027 charlotte@us.dadabhagwan.org |
| 10-Jul | Wed | Charlotte | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 10-Jul | Wed | Charlotte | **Gnanvidhi** | 6.30 PM | 9.30 PM | | |
| 11-Jul | Thu | Charlotte | Follow-up Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | | |
| 12-Jul | Fri | Atlanta | Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | Gujarati Samaj, 5331 Royalwood parkway, Tuker, Georgia 30084 | Ext. 1011 atlanta@us.dadabhagwan.org |
| 13-Jul | Sat | Atlanta | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 13-Jul | Sat | Atlanta | **Gnanvidhi** | 5.00 PM | 8.00 PM | | |
| 14-Jul | Sun | Atlanta | Follow-up Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 18-Jul | Thu | Jacksonville | GP Shibir | 9.30 AM | 12.30 PM | Hyatt Regency Jacksonville River Front, 225 Coastline Drive, Jacksonville, FL | Ext. 10 gp@us.dadabhagwan.org |
| 18-Jul | Thu | Jacksonville | GP Shibir | 4.30 PM | 7.00 PM | | |
| 19-Jul | Fri | Jacksonville | GP Shibir | 9.30 AM | 12.30 PM | | |
| 19-Jul | Fri | Jacksonville | GP Shibir | 4.30 PM | 7.00 PM | | |
| 20-Jul | Sat | Jacksonville | General Satsang | 9.30 AM | 12.30 PM | | |
| 20-Jul | Sat | Jacksonville | **Gnanvidhi** | 4.00 PM | 7.00 PM | | |
| 21-Jul | Sun | Jacksonville | **Swami Pranpratishtha** | 9.00 AM | 12.30 PM | | |
| 21-Jul | Sun | Jacksonville | GP Shibir | 4.30 PM | 7.00 PM | | |
| 22-Jul | Mon | Jacksonville | **GURUPURNIMA** | 8.00 AM | 12.30 PM | | |
| 22-Jul | Mon | Jacksonville | **GURUPURNIMA** | 4.30 PM | 7.00 PM | | |
| 23-Jul | Tue | Jacksonville | GP Shibir | 9.30 AM | 12.00 PM | | |

# अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१३

**सत्संग शिविर** : **दि. ३० मई से २ जून २०१३**, सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७

**ज्ञानविधि** : **दि. २ जून ( रविवार )**, दोपहर ३-३० से ७

**तीर्थ यात्रा** : **दि. ३ जून ( सोमवार )**, सुबह से शाम तक - **शंखेश्वर तीर्थ**

**सूचना : यदि आप यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 4 जून का लें।**

**- अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन से अडालज त्रिमंदिर पहुँचने के लिए सिटी बस 89/1 और ओटो रिक्षा, टेक्सी मिलेगी।**

## बच्चों-युवकों के लिए हिन्दी शिविर दौरान विशेष संस्कार सिंचन शिविर

**दि. 31 मई से 2 जून** - **वयमर्यादा :** 7 से 12 साल - बच्चें, 13 से 16 साल - लड़कें / लड़कियाँ

यह शिविर में शामिल होने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना जरूरी है। जिसमें किड्स केम्प के लिए रु. 50 रजिस्ट्रेशन चार्ज रखा गया है। किड्स केम्प का रजिस्ट्रेशन चार्ज हिन्दी शिविर के समय यहाँ अड़ालज आ कर दे सकते हैं। युथ केम्प निःशुल्क है। रजिस्ट्रेशन के लिए अपने बच्चों का पूरा नाम, उम्र, फोन नं., सेन्टर का नाम ये सब जानकारी देनी होगी। ये जानकारी आपको register.hindi@dadabhagwan.org ईमेल आईडी पर भेजनी होगी। संपर्क : 079 - 39830939

## अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में प्रथम बार ब्रह्मचर्य शिविर - दि. ४-५ जून, २०१३

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9723707737 पर संपर्क करें।

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

### दुबई

दि. **६ और ८ जून** (गुरु-शनि) शाम ७ से ९-३० - **सत्संग** तथा **७ जून** (शुक्र) शाम ५-३० थी ९ - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** होटेल Dhow Palace स्टान्डर्ड चाटर्ड बेंक के पास, कुवैत स्ट्रीट, **बर दुबई. संपर्क :** +971 55-7316937

### अडालज त्रिमंदिर

दि. **१७ अगस्त** (शनि), शाम ४-३० से ७ - **सत्संग** तथा **१८ अगस्त** (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**

दि. **२० अगस्त** (मंगल), सुबह ८-३० से ११-३० - **रक्षाबंधन के अवसर पर दर्शन-भक्ति**

दि. **२८ अगस्त** (बुध), रात १० से १२ - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति**

**पर्युषण पर्व पारायण - दि. २ - ९ सितम्बर तथा दर्शन - दि. १ सितम्बर २०१३**

---

**दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना**

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

---

**मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिरः** (079) 39830100, **अहमदाबादः** (079) 27540408, **वडोदरा : ( दादा मंदिर )** (0265) 2414142, **राजकोट त्रिमंदिरः** 9274111393, **भूज त्रिमंदिरः** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिरः** (02672) 262300, **मुंबईः** 9323528901, **दिल्लीः** 9310022350, **बैंगलूरः** 9590979099, **कोलकताः** 033-32933885, **यु.के.:** +44(0)330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडाः** +1-877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलियाः** +61 421127947, **केन्याः** +254 722722063

मई २०१३
वर्ष-८, अंक-७
अखंड क्रमांक - ९१

# दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

## पिछले क़रारों की पूर्ति,

## समभाव निकाल से

जितने संयोग उतनी ही फाइलें, फिर वह मनुष्य के रूप में हो या किसी और रूप में हो। संयोग वियोगी स्वभाव के हैं। इसलिए समभाव से निकाल करना। ये तीन लोग आएँ, उनका समभाव से निकाल कर दिया, है कोई शिकायत ? इन सबका निबेड़ा ला देता हूँ। कोई उलटा स्वभाव का, तो कोई ऐसे स्वभाव का, उसका मैं समभाव से निकाल करता हूँ। समभाव से निकाल तो करना पड़ेगा न ? यह तो हमारे लक्ष्य में होता ही है कि यह शुद्धात्मा है और मेरे लिए अभी यह फाईल के रूप में है। दो प्रकार की दृष्टि होती है हमारी ; निश्चय से तो निर्दोष है, व्यवहार से भी निर्दोष है और फिर इस फाइल का समभाव से निकाल करना है। अब मेरे नाम का क्लेइम (दावा) दर्ज नहीं होता कहीं। कोई संयोग बाधाजनक नहीं हो, ऐसा विज्ञान दिया है।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.